पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-VI

Hindi

Specimen copy

Year- 2022-23

Semester- 2

अनुक्रमणिका

क्रमनंबर	महीना	पाठ / कविता का नाम
1	अक्तूबर	➢ **कविता-10= झाँसी की रानी** व्याकरण = क्रिया लेखन -विभाग = निबंध ➢ **पाठ-11= जो देखकर भी नहीं देखते** व्याकरण = क्रिया-विशेषण लेखन -विभाग = संवाद लेखन ➢ बाल रामायण = पाठ -7,8 ➢ **पाठ -12 संसार पुस्तक है** व्याकरण – वाक्य लेखन विभाग- अनुच्छेद
2	नवम्बर	➢ **कविता-13 मैं सबसे छोटी होऊँ** व्याकरण = मुहावरे और लोकोक्तियाँ लेखन-विभाग- अनुच्छेद ➢ **कविता-14 लोकगीत** व्याकरण = अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लेखन-विभाग- कहानी लेखन ➢ बाल रामायण =पाठ -9,10
3	दिसम्बर	➢ **पाठ-15 नौकर** व्याकरण = कारक लेखन = पत्र-लेखन ➢ **कविता-16 वन के मार्ग में** व्याकरण = विराम-चिह्न लेखन = विज्ञापन ➢ **पाठ-17 साँस साँस में, बाँस** व्याकरण = अशुद्ध वाक्य लेखन = सूचना ➢ बाल रामायण =पाठ- 11 12

कणिता-10 झाँसी की रानी

- सुभद्रा कु मारी चौिान

➢ कविता का सार

प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा दिखाए गए
अपूर्व शौर्य का उल्लेख किया है। उस युद्ध में लक्ष्मीबाई ने अपनी अद्भुत युद्ध कौशल और साहस का
परिचय देकर बड़े-बड़े वीर योद्धाओं को भी हैरान कर दिया था। उनकी वीरता और पराक्रम से उनके शत्रु मन भी प्रभावित थे। उन्हें बचपन से ही तलवारबाजी, घुड़सवारी, तीरंदाजी और निशानेबाजी का शौक था।
वह बहुत छोटी उम्र में ही युद्ध-विद्या में पारंगत हो गई थीं। अपने पति की असमय मृत्यु के बाद उन्होंने एक कुशल शासक की तरह झांसी का राजपाट संभाला तथा अपनी अंतिम सांस तक अपने राज्य को बचाने के लिए अंग्रेजों से अत्यंत वीरता से लड़ती रहीं। उनके पराक्रम की प्रशंसा उनके शत्रु भी करते थे।

➢ कठिन शब्द

1) भकुटी
2) सत्तािन
3) वबसात
4) सुभट
5) कृतज्ञ
6) उदित
7) डलहौजी
8) विषम
9) व्यूह
10) सन्मुख
11) आराध्य
12) पुलदकत

➢ शब्दार्थ

1- भृकुटी- आँख के ऊपर के बाल, भौंह
2- सत्तावन- स्तुति करने की क्रिया, भाव
3- पुलकित- प्रेम, हर्ष
4- व्यूह- पंक्ति, झुंड
5- आराध्य- पूजनीय
6- सुभट- बड़ा योदधा
7- विरुदावलि- बड़े व्यक्ति क गुण
8- उदित- प्रकाशित
9- डलहौजी- अंग्रेज का नाम
10- हरषाया- खुश होना
11- अश्रुपूर्ण- आँसुओ से भरा हुआ
12- बिसात- जमा पूँजी
13- विषम- विचित्र, अनोखा
14- वेदना- पीड़ा
15- सन्मुख- सामने
16- कृतज्ञ- सुखद

➢ बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) ‘झाँसी की रानी’ कविता किसने लिखी है?
(i) लक्ष्मीबाई **(ii) सुभद्रा कुमारी चौहान**
(iii) सुमित्रानंदन पंत (iv) केदारनाथ अग्रवाल

(ख) रानी लक्ष्मीबाई किसकी मुँहबोली बहन थी?
(i) अजीमुल्ला खाँ (ii) अहमदशाह
(iii) कुँवर सिंह **(iv) नाना धुंधूपंत पे**

(ग) कवयित्री ने झाँसी की रानी की कथा किसके मुँह से सु
(i) मराठों के **(ii) बुंदेलों के**
(iii) अपने अध्यापक के (iv) कवियों के

(घ) नाना साहब कहाँ के रहने वाले थे?
(i) इलाहाबाद (ii) झाँसी
(iii) कानपुर (iv) ग्वालियर

(ङ) लक्ष्मीबाई का प्रिय खेल था?
(i) नकली युद्ध करना (ii) व्यूह की रचना करना, शिकार करना
(iii) सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना **(iv) उपर्युक्त सभी**

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. महल में खुशी का कारण क्या था?
उत्तर- विवाह के बाद रानी लक्ष्मीबाई का महल में आना खुशी का प्रमुख कारण था।

प्रश्न 2. डलहौजी प्रसन्न क्यों था?
उत्तर- क्योंकि निःसंतान राजा गंगाधर राव की मृत्यु होने पर झाँसी का अधिकार स्वतः ही अंग्रेजी सरकार को मिल जाना था इसलिए डलहौजी प्रसन्न था।

प्रश्न 3. ब्रिटिश सरकार ने झाँसी के दुर्ग पर झंडा क्यों फहराया?
उत्तर- क्योंकि वहाँ के राजा निःसंतान मृत्यु को प्राप्त हुए।

प्रश्न 4. अंग्रेजों ने भारत के किन-किन क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था?
उत्तर- अंग्रेजों ने भारत के कई प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था। उनमें से प्रमुख हैं- दिल्ली, लखनऊ, बिहार, नागपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध, पंजाब, मद्रास आदि।

प्रश्न 5. रानियों और बेगमों की क्या दशा थी?
उत्तर- वे परेशान थीं, क्योंकि उनके कपड़े और गहने खुलेआम बाजारों में बेचे जा रहे थे।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. झाँसी की रानी के जीवन से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?

उत्तर- झांसी की रानी के जीवन से हम देश के लिए मर मिटने, स्वाभिमान से जीने, विपत्तियों से न घबराने, साहस, दृढ़ निश्चय, नारी अबला नहीं सबला है आदि की प्रेरणा ले सकते हैं।

प्रश्न 2 भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर करने का निश्चय क्यों किया था?

उत्तर- भारत कई सौ वर्षों तक गुलाम रहा। इस कारण यहां के लोग स्वतंत्रता के महत्त्व को भूल गए थे। इस आंदोलन से उन्हें स्वतंत्रता का महत्व को समझ में आ गया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि फिरंगी धीरे -धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस कारण भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर भगाने का निश्चय किया।

प्रश्न 3 ऐसी कौन-सी विशेषताएँ थीं जिनके कारण मराठे लक्ष्मीबाई को देखकर पुलकित हुए?

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई वीर और साहसी नारी थीं उन्हें युद्ध कला में महारथ हासिल थी। नकली युद्ध व्यूह की रचना करना, खूब शिकार खेलना, सेना घेरना और दुर्ग तोड़ना उनके प्रिय खेल थे। लक्ष्मीबाई की इन विशेषताओं को देखकर मराठे बहुत पुलकित होते थे।

व्याकरण

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।

'क्रिया' का अर्थ होता है- करना। प्रत्येक भाषा के वाक्य में क्रिया का बहुत महत्व होता है। अली पुस्तक पढ़ रहा है। बाहर बारिश हो रही है। बाजार में बम फटा। बच्चा पलंग से गिर गया।

1) अकर्मक क्रिया- अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है, कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पड़ती और क्रियाओं का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - तैरना, कूदना, सोना, उछलना, मरना, जीना, रोना, हंसता, चलता, दौड़ता, होना, खेलना,

उदाहरण -

(i) वह चढ़ता है।

(ii) वे हंसते हैं।

(iii) नीता खा रही है।

(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।
(v) बच्चा रो रहा है।

2) **सकर्मक क्रिया-** सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अर्थात जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे -

(i) वह पढ़ाई पढ़ता है।

(ii) मैं खुशी से हँसता हूँ।

(iii) नीता खाना खा रही है।

(iv) बच्चे जोरों से रो रहे हैं।

लेखन-विभाग

निबंध

दशहरा (विजयदशमी)

रूपरेखा

1. आस्था का प्रतीक
2. मनाने की तिथि या समय
3. मनाने के कारण (पौराणिक कथा)
4. मनाने का ढंग या रूप
5. उपसंहार

भूमिका

समय-समय पर भारत के त्योहार आकर हमें कोई न कोई संदेश अथवा प्रेरणा देते रहते हैं। ये त्योहार हमारे प्राचीन गौरव के प्रतीक हैं। इन त्योहारों के आधार पर ही हम अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़े रहते हैं। भारत के विभिन्न त्योहारों में दशहरा भी एक विशेष त्योहार है जो विजयदशमी के नाम से भी प्रसिद्ध है। त्योहार मनाने का समय- दशहरे का पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन आता है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथमा से नवरात्र आरंभ होते हैं। नवरात्र नौ दिन तक चलते हैं, इन नौ दिनों में मंदिरों में दुर्गा पूजा की जाती है। नवमी के बाद दशमी को दशहरे का पर्व मनाया जाता है।

पौराणिक कथा

प्रत्येक त्योहार या पर्व को मनाने के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य होता है। विजयदशमी का पवित्र दिन श्री राम कथा से जुड़ा है। इसी दिन राजा दशरथ के पुत्र श्री राम ने लंका के अत्याचारी राक्षसराज रावण का वध किया था। रावण के साथ श्री राम ने समस्त अत्याचारियों का विनाश किया और तभी से संपूर्ण देश में रामराज्य स्थापित हो गया था। इसी घटना की याद में यह त्योहार विशेष रूप से हिंदू धर्मावलंबियों द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है। बंगाल में इसे दुर्गा-पूजा के रूप में मनाया जाता है।

मनाने का रूप या ढंग

दशहरा पर्व से ठीक दस दिन पहले से उत्तर भारत में स्थान-स्थान पर श्री रामकथा (रामलीला) का आयोजन प्रारंभ हो जाता है। रामलीला रात्रि आठ बजे से शुरू की जाती है जो ग्यारह तक क्रमानुसार रूप से चलती है। रामलीला देखने गाँव-गाँव से शहर-शहर से विशाल जनसमूह उमड़ पड़ता है। इन्हीं दिनों स्थान-स्थान पर रामचरितमानस का पाठ भी

दोहराया जाता है। लोग घर पर निरात्रों के दिन व्रत रखते हैं और नौ दिन तक मा दुगा की पूजा करते

हैं। बंगाल में मां दुर्गा की विशाल प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना की जाती है, उन्हें विजयदशमी के दिन नदी या समुद्र में विसर्जित कर दिया जाता है। इसी दिन श्री राम, लक्ष्मण, सीता तथा समस्त वानर-दल की आकर्षक झांकियां निकाली जाती हैं। एक बड़े तथा खुले मैदान में लोग रावण, मेघनाद तथा कुंभकरण के बड़े-बड़े पुतले बनाते हैं। श्रीराम के रूप में एक व्यक्ति इन पुतलों पर अग्नि बाणों की वर्षा करता है। इन पुतलों में बहुत पटाखे होने के कारण वे चट-चट की आवाज करके धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। बच्चे इस प्रकार का दृश्य देखकर फूले नहीं समाते।

प्रेरणा

समाज के क्षत्रिय लोग इस दिन अपने अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करते हैं। व्यापारी लोग इस दिन को अत्यंत शुभ मानते हैं। विजयदशमी का त्योहार हमें प्रेरणा देता है कि धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर, अच्छाई की बुराई पर सदा जीत होती है।

उपसंहार

इस दिन हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम जीवन में सत्य, धर्म और अच्छाई के मार्ग पर चलते रहेंगे और श्रीराम के आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे।

- **गतिविधि- रानी लक्ष्मीबाई का चित्र बनाए अथवा लगाए |**

रामबाल- कथा
पाठ-7 सोने का हिरण

प्रश्न- सोने का हिरण कौन बना था?
उत्तर- सोने का हिरण मारीच बना था।
प्रश्न- राम को कुटिया से निकलते देख कर मायावी हिरण ने क्या किया? उत्तर- राम को कुटिया से निकलते देख कर मायावी हिरण कुलाँचें भरने लगा। **प्रश्न- हिरण किस प्रकार चालाक था?**
उत्तर -हिरण चालाक था क्योंकि वह इतनी दूर कभी नहीं जाता था कि वह राम की पहुँच से बाहर हो जाए।
प्रश्न- राम ने लक्ष्मण को क्या आदेश दिया था?
उत्तर- राम ने लक्ष्मण को उनके लौटने तक सीता की रक्षा का आदेश दिया था।
प्रश्न- सीता क्या सुनकर विचलित हो गई?
उत्तर - सीता मायावी पुकार सुनकर विचलित हो गई।

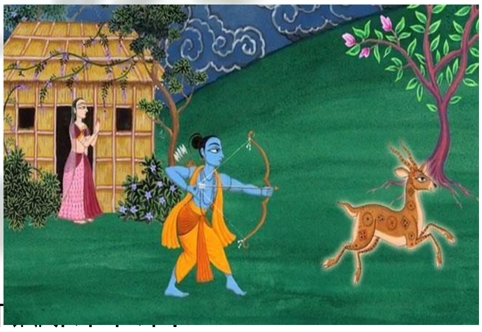

प्रश्न- लक्ष्मण के जाते ही कौन आ पहुँचा? उत्तर - लक्ष्मण के जाते ही रावण आ पहुँचा। **प्रश्न- रावण किस वेश में आया था?**
उत्तर - रावण तपस्वियों के वेश में आया था।
प्रश्न- रावण ने सीता के किन गुणों की प्रशंसा की?
उत्तर - रावण ने सीता के रुप, संस्कार और साहस की
प्रश्न- रावण सीता को लेकर सीधे कहाँ गया?
उत्तर - रावण सीता को लेकर सीधे अपने अंतःपुर में गया।
प्रश्न- मारीच हिरण के रूप में क्यों भागता रहा?
उत्तर- मारीच हिरण के रूप में राम को कुटिया से दूर ले जाने के लिए भागता रहा।
प्रश्न- राम ने लक्ष्मण को क्या आदेश दिया था?
उत्तर- राम ने लक्ष्मण को उनके लौटने तक सीता की रक्षा का आदेश दिया था।
प्रश्न- सीता क्या सुनकर विचलित हो गई?
उत्तर -सीता मायावी पुकार सुनकर विचलित हो गई।

प्रश्न- सीतCा कCो णिचणलत दCे ख लक्ष्मि नCे उनसCे क्यCा कहिCा?

उत्तर - लक्ष्मण नCे सीतCा सCे कहCा क्रक राम संकट मCें हCो हCी नहCीं सकतCे हैं । उनकCा कCोई कुछ नहCीं क्रबगCाड़ सकतCा। हमने जो आिाज सुनी है, िह बनािटी है ।

प्रश्न- सीतCा क्रोध सCे क्यCों उबल पड़ी?

उत्तर- सीता क्रोध सCे इसक्रलए उबल पड़ी क्यCोंक्रक राम की पुकार सुन कर भी लक्ष्मण शCांत खड़े रहCे ।

प्रश्न- सीतCा जी णकसCे -णकसCे अपनी सूचना रCामजी तक पहुCाँचानCे को कह रहीं थीं?

उत्तर - सीतCा जी पशुओं, पक्रक्षयों, पहाड़ों, नक्रदयCों सCे अपनी सूचना रामजी तक पहुँचानCे कCो कह रहीं थीं ।

प्रश्न- क्रोणधत रािण नCे जटCायु के साथ क्यCा णकयCा?

उत्तर- क्रोक्रधत रािण नCे जटायु के पंख कCाट क्रदए ।

प्रश्न- रािण नCे णकतनCे राक्षसCों कCो राम और लक्ष्मण की णनगरानी के णलए भCेजCा थCा?

उत्तर - रािण नCे आठ सबसCे बक्रलष्ठ राक्षसCों कCो राम और लक्ष्मण की क्रनगरानी के क्रलए भCेजा था।

पाठ-11 जो देखकर भी नहीं देखते
- हेलेन केलर

➢ पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ लेखिका हेलेन केलर द्वारा लिखा गया प्रेरक लेख है। जो स्वयं दृष्टिहीन और बधिर थी। इस पाठ के द्वारा उन्होंने मनुष्यों को अपना जीवन बेहतर बनाने की प्रेरणा दी है। लेखिका की सहेली कुछ दिन पहले जंगल की सैर कर आई थी। लेखिका ने जानना चाहा कि उसने जंगल में क्या देखा परन्तु उसने बताया कि कुछ खास नहीं। लेखिका को ऐसे उत्तर सुनने की आदत हो गई थी। इसलिए उन्हें अपनी सहेली के जवाब पर आश्चर्य नहीं हुआ। लेखिका को लगता था कि कोई इतना घूमकर भी विशेष चीजें कैसे नहीं देख सकता, जबकि वो दृष्टिहीन होते भी सब कुछ देख लेती है।
लेखिका रोजाना सैकड़ों चीजों को छू कर पहचान लेती थी। लेखिका केवल स्पर्श मात्र से ही भोजपत्र की चिकनी छाल, चीड़ की खुरदरी छाल, वसंत में खिली कलियाँ तथा फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह को पहचान लेती थी। अपनी अंगुलियों के बीच बहते पानी को महसूस करने में उन्हें आनंद मिलता था। बदलता मौसम उनके जीवन में खुशियाँ भर देता जब चीजों को छूने मात्र से ही उन्हें इतनी खुशी मिलती थी यदि वे इन सब चीजों को देख पाती तो वे उन में खो ही जाती।
लेखिका के अनुसार जिनकी आँखें होती हैं वे लोग बहुत ही कम देखते हैं। वे प्रकृति को लेकर असंवेदनशील होते हैं। मनुष्य के पास जिस चीज की भी कमी होती है उसे वह पाने के लिए लालायित रहता है। ईश्वर से प्राप्त दृष्टि को मानव एक साधारण वस्तु समझकर उसका उचित प्रयोग करता ही नहीं है। परन्तु यदि इसी चीज का उचित प्रयोग किया जाय तो जीवन में इंद्रधनुषी रंग भरे जा सकते हैं।

➢ कठिन शब्द

1) अचरज　　2) विश्वास
3) प्रकृति　　4) कालीन

5) स◌ंि◌ि◌ेदना

6) र◌ोि◌िक

7) दक्रि

➢ शब्दार्थ

1- परखना- जाँचना, देखना
2-जंगल- वन
3- अचरज- हैरानी, आश्चर्य
4- विश्वास- भरोसा
5- रोचक- दिलचस्प, आनंददायक
6- प्रकृति- स्वभाव
7- कालीन- गलीचा
8- दृष्टि- नज़र
9- संवेदना- सहानुभूति
10- भोज-पत्र- एक विशेष प्रकार की वृक्ष की छाल

➢ बहुणिकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) "जो देखकर भी नहीं देखते' पाठ के लेखक कौन हैं?

(i) ि◌◌ेमि◌◌ंद (ii) स◌ु◌ंदरा स्व◌ामी

(iii) जया क्रि◌ि◌क **(iv) ि◌◌ेल◌ेन के लर**

(ख) ह◌ेल◌ेन के लर ि◌कृ क्रत क◌ी ि◌◌ीज◌ो◌ं क◌ो क्रकस ि◌क◌ार पहि◌◌◌ानती ह◌ै◌ं?

(i) देखकर (ii) सुंघकर

(iii) छू कर (iv) दू सर◌ो◌ं स◌े उसक◌ा ि◌णन स◌ुनकर

(ग) ल◌े क्तखक◌ा क◌ो क्रकसम◌े◌ं आन◌ंद क्रमलता ह◌ै?

(i) लोगों से बात करने में

(ii) ि◌कृ क्रत क◌ो क्रनहारन◌े म◌े◌ं

(iii) फू ल◌ो◌ं की प◌ंख◌ुणड़र्◌ो◌ं क◌ो छू न◌े और उसकी घ◌ुम◌ाि◌द◌ार बनाि◌ट को मि◌स◌ूस करन◌े म◌े◌ं

(घ) ल◌े क्तखक◌ा क्रकसक◌े स्वर पर म◌ंत्रम◌ुग्ध ह◌ो जाती ह◌ै?

(i) कोयल के (ii) मैना के

(iii) मोर के **(iv) णचणड़र्◌ा के**

(ङ) इनम◌े◌ं क्रकस प◌ेड़ क◌ी छ◌ाल क्रकनी होत◌ी ह◌ै?

(i) ि◌◌ीड़ **(ii) भोज-पत्◌े**

(iii) पीपल (iv) बरगद

➢ अहतलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

- ल◌ेखखका के कान◌ो म◌े◌ं हकसक◌े मध◌ुर स्वर गजन◌े लगत◌े थ◌े?

उत्तर- ल◌ेखखक◌ा के क◌ान◌ो म◌े◌ं हचहहि◌य◌ो के मध◌ुर ि◌र गजन◌े लगत◌े थ◌े।

2- ल◌ेखखका क◌ो प्रकृ हत के जाद◌ु क◌ा अि◌सास कब ि◌◌ोत◌ा ि◌◌ै?

उत्तर- फू ल◌ो क◌ी पख◌ुहि◌य◌ो क◌ी मखमल◌ी सति◌ छू न◌े और उनक◌ी घ◌ुमावद◌ार बन◌ावि मि◌स◌ूस करन◌े स◌े ल◌ेखखक◌ा क◌ो प्रकृ हत के जाद◌ू क◌ा अिसास ि◌◌ोत◌ा ि◌◌ै।

3- इस द◌ुहनया के लोग कै स◌े ि◌◌ै◌ं?

उत्तर- इस द◌ुहनय◌ा के अहधक◌ाश ल◌ोग सव◌ेदनि◌◌ीन ि◌◌ै◌ं। व◌े अपन◌ी क्षमताओं क◌ी कद्र करना ि◌◌ी जानत◌े।

- ि◌◌ेल◌ेन के लर अपन◌े हमत्◌ो क◌ी परीक्षा क्य◌ो ल◌ेत◌ी ि◌◌ै?

उत्तर- ि◌◌ेल◌ेन के लर अपन◌े हमत्◌ो क◌ी परीक्ष◌ा यि परखन◌े के हलए ल◌ेती ि◌◌ै हक व◌े क्◌ा द◌ेखत◌े ि◌◌ै◌ं।

5-ल◌ेखखका क◌ो झरन◌े क◌ा पान◌ी कब आनहदत करत◌ा ि◌◌ै?

उत्तर- ल◌ेखखक◌ा जब झरन◌े के पान◌ी म◌े◌ं अ◌ुँग◌ुहलय◌ाँ डालकर उसक◌े बि◌◌ाव क◌ो मि◌स◌ूस करती ि◌◌ै, तब वि आनहदत ि◌◌ो उठती ि◌◌ै।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1- लेखिका को किस काम से खुशी मिलती है?

उत्तर- लेखिका को प्रकृति की वस्तुओं को स्पर्श करने में खुशी मिलती है। वह चीजों को छू कर उनके बारे में जान लेती है। यह स्पर्श उसे आनंदित कर देता है।

2- मनुष्य का स्वभाव क्या है?

उत्तर- मनुष्य अपनी क्षमताओं की कदर नहीं करता। वह अपनी ताकत और अपने गुणों को नहीं पहचानता। वह नहीं जानता कि ईश्वर ने उसे आशीर्वाद स्वरूप क्या-क्या दिया है और उसका उपयोग नहीं कर सकता है। मनुष्य केवल उस चीज के पीछे भागता रहता है, जो उसके पास नहीं है। यही मनुष्य का स्वभाव है।

3- इस पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस पाठ से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में जीने के लिए मनुष्य के पास जो साधन उपलब्ध हैं उनसे संतुष्ट रहना चाहिए।

व्याकरण

➢ **क्रिया- विशेषण - वह शब्द जो हमें क्रियाओं की विशेषता का बोध कराते हैं, वे शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।**

- **ऐसे शब्दों में - जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन शब्दों को हम क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे - हिरण तेज भागता है।**
- **इस वाक्य में भागना क्रिया है। तेज शब्द हमें क्रिया की विशेषता बता रहा है कि वह कैसे भाग रहा है। अतः तेज शब्द क्रिया-विशेषण है।**

क्रिया-विशेषण के भेद

1) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के स्थान का पता चले उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, सामने, नीचे, ऊपर, , पास, अंदर, किधर, इस ओर, उस ओर, आगे, भीतर, बाहर, इधर, उधर, जिधर, दाएँ, बाएँ, दाहिने आदि।

उदाहरण -

(i) बच्चे ऊपर खेलते हैं।

(ii) अब वहाँ अकेला मजदूर था।

(iii) तुम बाहर बैठो।

(iv) वह ऊपर बैठा है।

2) कालवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के समय का पता

चलता है, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - आज, कल, परसों, पहले, अब तक, अभी-अभी, लगातार, बार-बार, प्रतिदिन, अक्सर, बाद में, जब, तब, अभी, कभी, नित्य, सदा, तुरंत, आजकल, कई बार, हर बार आदि।

उदाहरण -

(i) आज बरसात होगी।

(ii) राम कल मेरे घर आएगा।

(iii) वह कल आया था।

(iv) तुम अब जा सकते हो।

3) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के परिमाण और उसकी संख्या का पता चलता है, उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - बहुत, अधिक, पूर्णतया, कुछ, थोड़ा, काफी, केवल, इतना, उतना, कितना, थोड़ा-थोड़ा, एक-एक करके, जरा, खूब, बिलकुल, ज्यादा, अल्प, बड़ा, भारी, लगभग, क्रमशः आदि।

उदाहरण -

(i) अधिक पढो।

(ii) ज्यादा सुनो।

(iii) कम बोलो।

(iv) अधिक पियो।

4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चलता है, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - सचमुच, ठीक, अवश्य, कदाचित, ऐसे, वैसे, सहसा, तेज, सच, झूठ, धीरे, ध्यानपूर्वक, हंसते हुए, तेजी से, फटाफट आदि।

उदाहरण -

(i) अचानक काले बादल घिर आए।

(ii) हरीश ध्यान पूर्वक पढ़ रहा है।

(iii) रमेश धीरे -धीरे चलता है।

(iv) वह तेज भागता है।

लेखन-विभाग

संवाद लेखन

दो मित्रों के बीच वार्षिकोत्सव पर संवाद लेखन -

अजन - अंकुर! आज तुम विद्यालय क्यों नहीं जा रहे हो? समय तो हो गया है।
अंकुर - मित्र! आज दोपहर के बाद हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव होना है। इसलिए मैं देर से जाऊंगा। **अजन** - आज तुम्हारे विद्यालय में उत्सव है तब तो वहां

बड़ी रौनक होगी। उत्सि का िबंध कौन कर रहा है? **अंकु र** - उत्सि के िबंध के क्रलए कु छ छात्र-छात्राएं तथा क्रशक्षक िहां उपक्तस्थत हैं।

अजन - ि◌ल◌ो क्रमत्र! हम द◌ोन◌ो◌ं ि◌लत◌े ह◌ै◌ं। म◌ुझ◌े भी क्रिद्य◌ालय क◌ा सम◌ारोह द◌ेखना ह◌ै।
(द◌ोन◌ो◌ं क्रमत्र क्रि◌द्य◌ालय जात◌े ह◌ै◌ं)

अ◌ंक◌ु र - (क्रिद्यालय पह◌ु◌ं ि◌कर) यह हम◌ारा क्रिद्य◌ालय ह◌ै। यह◌ा उत्स ि◌ क◌ी त◌ैयार◌ी म◌े◌ं क्रशक्षक◌ो◌ं के साथ अन्य कम ि◌ार◌ी तथा कु छ छात्र-छात्राएं लगे हुए हैं।

अजन - ऐस◌ा लगता ह◌ै क◌ी समारोह ि◌ारम्भ होन◌े ि◌ाला ह◌ै। आज उत्स ि◌ क◌ा क◌ै स◌ा क◌ाय ि◌ म ह◌ै?

अ◌ंक◌ु र - आज अन◌ेक ि◌क◌ार क◌ा क◌ाय ि◌ म ह◌ै। कु छ छ◌ात्र-छात्र◌ाए◌ं ग◌ीत ग◌ाय◌े◌ं ग◌े, कु छ अक्रभनय कर◌े◌ं ग◌े तथा कु छ ख◌ेल◌ो◌ं क◌ा ि◌दशन कर◌े◌ं ग◌े। ि◌ ि◌ र प◌ुरस्कार◌ो◌ं क◌ा ि◌ितरण होग◌ा। अ◌ंत म◌े◌ं सभ◌ाध्यक्ष क◌ा भाषण भी होग◌ा।

अजन - क्य◌ा सभापक्रत त◌ुम्ह◌े भी प◌ुरस्कार द◌े◌ं ग◌े?

अ◌ंक◌ु र - म◌ै◌ं ि◌ाक्रषक परीक्ष◌ा म◌े◌ं अपन◌ी कक्ष◌ा म◌े◌ं ि◌थम आय◌ा थ◌ा, म◌ुझ◌े भी प◌ुरस्कार क्रमल◌ेग◌ा।
(थोड़ी दे र बाद समारोह ि◌ारम्भ हो जाता है। दोनों दोस्त बैठ जाते हैं।)

➢ **गणतणिणध – प्रकृ णत क◌ा णचत् बनाए |**

बाल- रामायण
पाठ- 8 सीता की खोज

प्रश्न- राम लक्ष्मण से क्यों क्रोधित थे?

उत्तर - राम लक्ष्मण से इसलिए क्रोधित थे क्योंकि लक्ष्मण सीता को अकेला छोड़ कर राम को ढूंढने के लिए निकल गए थे।

प्रश्न- राम की बेचैनी क्यों बढ़ गई?

उत्तर - जब राम के पुकारने पर भी कुटिया से सीता की कोई आवाज नहीं आई तो राम की बेचैनी बढ़ गई।

प्रश्न- विरह में राम ने सीता का पता किस-किस से पूछा?

उत्तर- विरह में राम ने सीता का पता गोदावरी नदी, पंचवटी के एक-एक वृक्ष, हाथी, शेर, फूलों, पत्थरों और चट्टानों से पूछा।

प्रश्न- सीता को वन में ढूँढते हुए राम क्या देख कर असमंजस में पड़ गए?

उत्तर- टूटे हुए रथ के टुकड़े, मृत घोड़े और मारा हुआ सारथी को वन में देखकर राम असमंजस में पड़ गए।

प्रश्न- रथ के पास राम को सीता की कौन सी वस्तु मिली?

उत्तर - राम को रथ के पास पुष्पमाला मिली जो सीता ने वेणी में गूँथ रखा था।

प्रश्न- जटायु की अंतिम क्रिया किसने की? उत्तर - जटायु की अंतिम क्रिया राम ने की। **प्रश्न- कबंध ने राम से क्या आग्रह किया?**

उत्तर - कबंध ने राम से आग्रह किया कि उसका अंतिम संस्कार राम करें।

प्रश्न- वानरराज सुग्रीव कहाँ रहते थे?

उत्तर - वानरराज सुग्रीव पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे।

प्रश्न- पंपा सरोवर के पास किसका आश्रम था?

उत्तर - पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम था।

प्रश्न- शबरी कौन थी और वो कहाँ रहती थी?

उत्तर - शबरी मतंग ऋषि की शिष्या थी और वह मतंग ऋषि के आश्रम में ही रहती थी।

प्रश्न- हिरणों ने किस प्रकार सीताजी के बारे में रामजी को संकेत दिया?

उत्तर- हिरणों ने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा और दक्षिण दिशा की ओर भाग गए। रामजी हिरणों

का संके त समझ गए।

प्रश्न- जटारु ने सीता के बारे में कौन सी मित्वपूर्ण सूचना दी थी?

उत्तर - जटायु ने सीता के बारे में यह महत्वपूण सूचना दी थी कि रावण सीता जी को दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर ले गया है।

प्रश्न- शबरी किसकी प्रतीक्षा में थी और क्यों?

उत्तर- शबरी राम की प्रतीक्षा में थी क्योंकि मतंग ऋषि ने सबरी को बताया था कि एक दिन राम आश्रम जरूर आएगे।

प्रश्न- शबरी ने राम की आिभगत किस प्रकार की?

उत्तर- शबरी ने राम की सेवा की । उन्हें मीठे फल दिए और रहने की जगह दी।

पाठ- 12 संसार पुस्तक है
- जवाहरलाल नेहरू

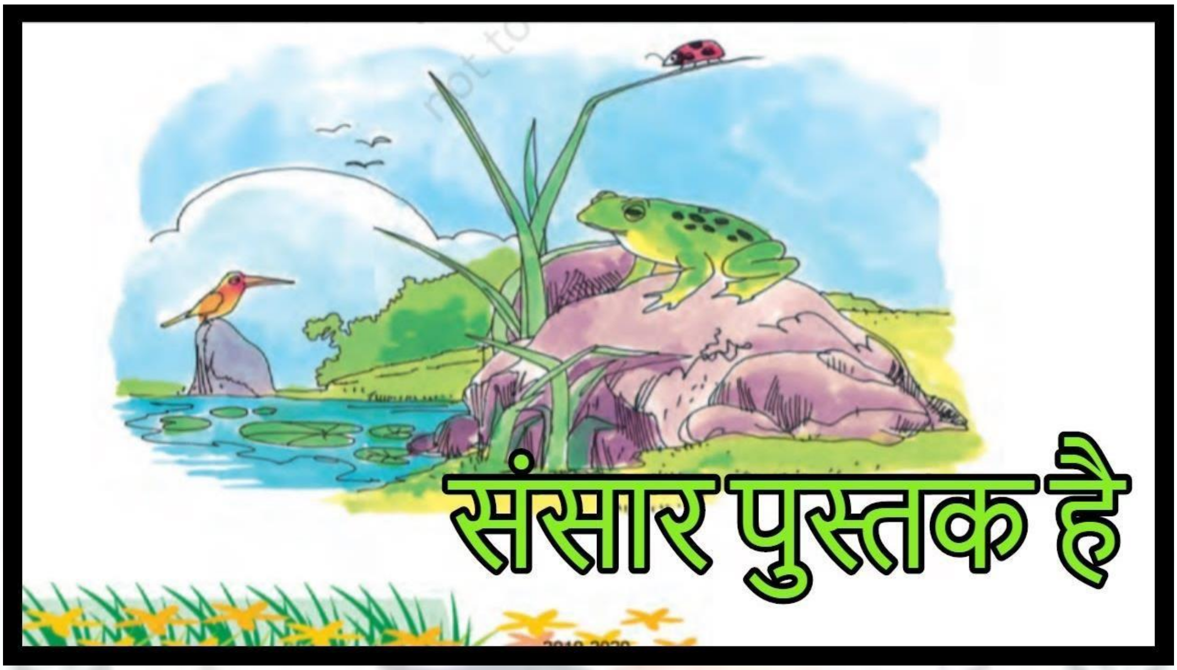

➢ पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ में जवाहरलाल नेहरू अपने पत्र के माध्यम से दुनिया और छोटे देशों के बारे में अपनी पुत्री को बताना चाहते थे। जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद में थे और उनकी दस वर्षीय पुत्री इंदिरा मसूरी में थी।

जवाहरलाल नेहरू अपनी बेटी इंदिरा से कहते हैं कि तुमने इंग्लैण्ड और हिन्दुस्तान के विषय में इतिहास में पढ़ा होगा। इंग्लैण्ड एक टापू है और जबकि हिन्दुस्तान दुनिया का एक बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा हिस्सा है। यदि इंदिरा को दुनिया का हाल जानना है तो उन्हें दुनिया की सब जातियों को जानना होगा, न के वल उस देश का जिसमें वो पैदा हुई हैं। इन छोटे-छोटे पत्रों के माध्यम से उसके पिता केवल उसे थोड़ी ही बातें बता सकते हैं। लेकिन फिर भी इन पत्रों के माध्यम से वो जान पाएगी कि दुनिया एक है और हम सभी भाई-बहन हैं। यह धरती करोड़ों वर्ष पुरानी है। पहले धरती पर कोई जानदार चीज नहीं थी। वैज्ञानिकों ने यह साबित किया कि धरती के गरम होने के कारण किसी भी जीव का विकास संभव नहीं था। बाद में धीरे-धीरे धरती पर जीवन का विकास आरंभ हुआ। पहाड़, समुद्र, सितारे, नदिया, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियों आदि से दुनिया का पुराना इतिहास जाना जा सकता है। जब धरती पर मनुष्य नहीं था तो दुनिया का पुराना इतिहास कौन लिखता। इसलिए धरती का इतिहास जानने के लिए हमें पत्थरों और पहाड़ों से सीखना होगा। जैसे किसी भाषा को सीखने के लिए हम अक्षर ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार प्रकृति के बारे में जानने के लिए हमें पत्थरों और चट्टानों से जानना होगा। सड़क पर या पहाड़ के नीचे का छोटा-सा पत्थर का टुकड़ा भी पुस्तक का पृष्ठ बन जाता है। कोई चिकना पत्थर भी अपने बारे में बहुत कुछ बताता है कि यह गोल, चिकना, चमकीला और खुरदुरे किनारे का कैसे हो गया। और अंत में जाकर वह बालू का कण कैसे हो गया और सागर किनारे जम गया। अगर छोटा-सापत्थर इतनी जानकारी दे सकता है, तो पहाड़ और अन्य चीजों से हमें कई बातें पता

िल सकती हैं।

➢ कठिन शब्द

1) आबाद
2) पृष्ठ
3) पेंदा
4) घरौंदे
5) बालू
6) रोड़ा

➢ शब्दार्थ

1- आबाद- रहने योग्य
2- मुश्किल- कठिन
3- रोड़ा- पत्थर या ईंट का टुकडा
4- पृष्ठ- पेज़, पन्ना
5- चटटान- शिला
6- पेंदा- तल, आधार
7- बालू- रेत
8- घरौंदे- छोटा घर

➢ बहुविकल्पी प्रश्न

(क) "संसार पुस्तक है" पाठ के लेखक कौन हैं?
(i) ि िमिं द
(ii) विनय महाजन
(iii) पं० जवाहरलाल नेहरू
(iv) कृष्णा सोबती

(ख) नेहरू जी ने यह पत्र किसको लिखा था?
(i) भारत के बच्चों को
(ii) अपनी पुत्री इंदिरा को
(iii) भारत के साहित्यकारों को
(iv) धार्मिक नेताओं को

(ग) लेखक के पत्रों का संकलन किस नाम से है?
(i) भारत एक खोज
(ii) संसार पुस्तक है।
(iii) संसार एक रंग-मंच
(iv) पिता के पत्र पुत्री के नाम

(घ) लेखक ने प्रकृति के अक्षर किसे कहा है?
(i) पहाड़ों को
(ii) नदी और मैदानों को

(ङ) किसी भाषा को सीखने के लिए सबसे पहले क्या
(i) सीखना होता है? ग
(ii) शब्द
(iii) वाक्य
(iv) शब्दांश

➢ अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1- हम इतिहास में क्या पढ़ते हैं?

उत्तर- हम इतिहास में बीते हुए समय की जानकारी पढ़ते हैं जैसे हिंदुस्तान और इंग्लैंड का इतिहास।

2- लेखक ने "प्रकृति के अक्षर" किन्हें कहा है?

उत्तर:- लेखक ने प्रकृति के अक्षर चट्टानों के, टुकड़ों, वृक्षों, पहाड़ों, नदियों, समुद्र

3 जानवरों की हड्डियाँ आदि को कहा है। ?

- दुनिया का हाल जानने के लिए किस बात का ध्यान रखना पड़ेगा

उत्तर- दुनिया का हाल जानने के लिए दुनिया के सभी देशों और वहाँ बसी सभी जातियों का ध्यान रखना होगा। केवल एक देश जिसमें हम पैदा हुए हैं की जानकारी प्राप्त कर लेना काफी नहीं है।

4- एक र◌ोड़ा दररय◌ा म◌े◌ं ल◌ुढ़कत◌ा ल◌ुढ़कत◌ा हकस स्◌ू◌प म◌े◌ं बदल ज◌ात◌ा ि◌◌ै ?

उत्तर- र◌ोि◌◌ा दररया म◌े◌ं ल◌ुढ़कत◌े ल◌ुढ़कत◌े छ◌ोि◌◌ा ि◌◌ोता जाता ि◌◌ै और अत म◌े◌ं र◌े त क◌ा कण बन जाता ि◌◌ै।

5- पत्थर अपनी कि◌◌ानी ि◌म◌े◌ं क◌ै स◌े बतात◌े ि◌◌ै◌ं?

उत्तर- पत्थर◌ो क◌ी कि◌◌ान◌ी उनके ऊपर ि◌◌ी हलखी हई ि◌◌ै। यहद ि◌म◌े◌ं उस◌े पढ़न◌े और समझन◌े की दृहि ि◌◌ो त◌ो ि◌म यि कि◌◌ान◌ी जान सकत◌े ि◌◌ै◌ं।

➢ लघु उत्तरीर् प्रश्न

1- ल◌े खक न◌े ससार क◌ो प◌ुस्तक क्य◌ो कि◌◌ा ि◌◌ै ?

उत्तर -ज◌ै स◌े प◌ुस्तक पढ़कर बहत स◌ी जानक◌ारी प्र◌ाप्त क◌ी जा सकती ि◌◌ै व◌ै स◌े ि◌◌ी ससार म◌े◌ं रिकर भी ि◌म◌े◌ं बहत स◌ी जानक◌ाररय◌ाँ◌ु प्र◌ाप्त ि◌◌ो सकती ि◌◌ै◌ं। इसहलए ल◌े खक न◌े ससार को प◌ुस्तक कि◌◌ा ि◌◌ै।

2- ल◌ाख◌ो करोड़◌ो वर◌् पिल◌े ि◌म◌ार◌ी धरत◌ी क◌ै सी थी

उत्तरः-ल◌ाख◌ो कर◌ोि◌◌ो वि पिल◌े ि◌म◌ारी धरती बहत गम थी और उस पर क◌ोई जानद◌ार चीज नि◌◌ी रि सकती थी। इस◌ी क◌ारण उस समय धरती पर मन◌ुष्य◌ो क◌ा अहस्तत्व नि◌◌ी था। ध◌ीर◌े ध◌ीर◌े उसम◌े◌ं पररवतन ि◌◌ोत◌े गए और धरती म◌े◌ं जानवर◌ो और पौध◌े क◌ा जन्म हआ?

3- द◌ुहनया क◌ा प◌ुराना ि◌◌ाल हकन चीज़◌ो स◌े जाना ,जाता ि◌◌ै

उत्तर द◌ुहनय◌ा क◌ा प◌ुर◌ाना ि◌◌ाल चट्ट◌ान◌ो के, ि◌◌ुक◌्ि◌,◌े वृक्ष◌ो, , पि◌◌ा◌ि◌◌ोहसतार◌े नहदय◌ो समुद्र जानवर◌ो क◌ी ि◌हि◌य◌ो आहद चीज◌ो स◌े जाना जाता ि◌◌ै।

➢ दीघ उत्तरीय प्रश्न

1- न◌े ि◌स्◌ू जी न◌े प◌ुत्◌ी क◌ो क्य◌ा सल◌ाि◌ दी

उत्तर -न◌े ि◌र◌ू जी न◌े प◌ुत◌्री क◌ो कि◌◌ा हक इग्ल◌ै◌ंड के वल एक छ◌ोि◌◌ा स◌ा ि◌◌ाप◌ू ि◌◌ै और ह◌ि◌द◌ुस्त◌ान, जो एक बहत ब◌्ि◌◌ा द◌े श ि◌◌ै हफर भी द◌ुहनय◌ा क◌ा एक छ◌ोि◌◌ा स◌ा हिस्सा ि◌◌ै। अगर त◌ुम्ह◌े◌ं इस द◌ुहनय◌ा क◌ा कुछ ि◌◌ाल ,जानन◌े क◌ा शौक ि◌◌ै जो त◌ुम्ह◌े◌ं सब द◌े श◌ो क◌ो और उन सब जाहतय◌ो

2- क◌ा जो इसम◌े◌ं बस◌ी हई ि◌◌ै◌ं क◌ा ध्यान रखना प◌्ि◌◌ेग◌ा के वल उस एक छ◌ोि◌◌े से द◌े श क◌ा नि◌◌ी हजसम◌े◌ं त◌ुम प◌ैद◌ा हई ि◌◌ो।

ग◌ोल चमक◌ील◌ा र◌ोड़ा अपन◌ी क्य◌ा कि◌◌ानी बतात◌ा ि◌◌ै ?

उत्तर -ग◌ोल और चमक◌ील◌ा हदखाई द◌े न◌े वाला र◌ोि◌◌ा पिल◌े ऐस◌ा नि◌◌ी था। एक समय यि र◌ोि◌◌ा एक ,चट्ट◌ान क◌ा ि◌◌ुक◌्ि◌◌ा था हजसम◌े◌ं हकनार◌े और क◌ोन◌े थ◌े। वि हकस◌ी पि◌◌ा◌ि◌ के द◌ामन म◌े◌ं पि◌◌ा था। जब पानी के साथ बिकर वि नीचे आ गया और घाि◌◌ी तक पहुँच गया। वि◌ाँ◌ु से एक पि◌◌ाि◌◌ी नाले ने ढके ल कर उसे एक छ◌ोि◌◌े से दररया में पहुँचा हदया। पानी के साथहनरतर ढके ल◌े जान◌े के क◌ारण उसके क◌ोन◌े हघस गए। दररया उस◌े

और आगे बढ़ाकर ले
गई। इस प्रकार की निरंतर प्रक्रिया के साथ वि गोल चमकदार और चिकना

3- िो गया। **लेखक ने इस दुनिया की और इस दुनिया के छोटे बड़े देशों की छोटी छोटी कथाएँ लिखने का इरादा क्यों किया**

उत्तर -जब लेखक और उनकी पुत्री साथ साथ रिते थे तो लेखक की पुत्री नेिरू जी से कई प्रश्न पूछा करती थी। नेिरू जी तब उसके प्रश्नों और बातों का उत्तर दिया करते थे। जब

लेखक की पुत्री अपने पिता से दूर मसूरी में थी तो उन दोनों की बातचीत नहीं हो सकती थी। अतः लेखक ने बहुत सरल सहज तरीके से कई दुर्लभ जानकारियाँ देने के लिए इस दुनिया की और इस दुनिया के छोटे बड़े देशों की छोटी छोटी कथाएँ पत्रों के माध्यम से लिखने का इरादा किया।

व्याकरण

- **वाक्य-विचार-** **मनुष्य अपने भावों या विचारों को वाक्य में ही प्रकट करता है। वाक्य सार्थक शब्दों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह से बनते हैं, जो किसी विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करते हैं। अर्थ प्रकट करने वाले सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह को वाक्य कहते हैं।**

- **जैसे-ओजस्व कमरे में टी.वी. देख रहा है।**

वाक्य के अंग – वाक्य के दो अंग होते हैं।
- उद्देश्य
- विधेय

1. उद्देश्य – वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे
- राजा खाता है।
- पक्षी डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में राजा और पक्षी उद्देश्य हैं।

2. विधेय – उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं; जैसे
- राजा खाता है।
- पक्षी डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में खाता है, और डाल पर बैठा है, विधेय है।

वाक्य के भेद

वाक्य के निम्नलिखित दो भेद होते हैं।
- रचना के आधार पर
- अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के अनुसार वाक्य के तीन प्रकार होते हैं
- सरल वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- मिश्रित वाक्य

(i) सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं; जैसे
- अंशु पढ़ रही है।
- कृपता जी अखबार पढ़ रहे हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य – जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र वाक्य समुच्चयबोधक शब्द से जुड़े रहते हैं, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है; जैसे
- नेहा गा रही है और अंशु नाच रही है।

उपर्युक्त वाक्य में दो सरल वाक्य और से जुड़े हुए हैं और समुच्चयबोधक हटाने पर ये स्वतंत्र वाक्य बन जाते हैं।

(iii) णमश्रि◌ाक्य – क्रजस ि◌◌ाक्य म◌े◌ं एक ि◌धान ि◌◌ाक्य होत◌ा ह◌ै और अन्य ि◌◌ाक्य उस पर आक्रश्रत य◌ा ग◌ौण ह◌ोत◌े ह◌ै◌ं, उसे क्रमक्रश्रत ि◌◌ाक्य कहते हैं; जैसे

- जो कल घर आया था, ि◌ह बाहर खड़ा है।

- कोमल विद्यालय नहीं जा सकी, क्योंकि वह बीमार है।

उपर्युक्त पहले और दूसरे वाक्य में जो कल घर आया था तथा कोमल विद्यालय नहीं जा सकी
प्रधान उपवाक्य हैं, जो क्रमशः वह बाहर खड़ा है तथा क्योंकि वह बीमार है, आश्रित उपवाक्यों से जुड़े हैं। अतः ये मिश्र वाक्य हैं।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के अनुसार वाक्य आठ प्रकार के होते हैं

1. विधानवाचक
2. निषेधवाचक
3. इच्छावाचक
4. प्रश्नवाचक
5. आज्ञावाचक
6. संकेतवाचक
7. विस्मयसूचक
8. संदेहवाचक

1. विधानवाचक – जिस वाक्य में किसी बात का होना या करना पाया जाए, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे

- वह मेरा मित्र है।
- अंशु अपना कार्य करती है।

2. 'निषेधवाचक वाक्य-जिस वाक्य में किसी बात या काम के न होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है; जैसे-

- उसने खाना नहीं खाया।

3. प्रश्नवाचक वाक्य-जिसे वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाए, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- आप कहाँ रहते हैं?
- तुम क्या पढ़ रहे हो?

4. आज्ञावाचक वाक्य-जिस वाक्य से आज्ञा तथा उपदेश का बोध होता है, वह आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है, जैसे

- तुम यहाँ से चले जाओ।
- अपना कमरा साफ़ करो।

5. विस्मयादिवाचक वाक्य-जिस वाक्य के द्वारा शोक, हर्ष, आश्चर्य आदि के भाव प्रकट होते हैं, वह विस्मयादिवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे

- वाह! क्या दृश्य है।
- अरे! यह क्या कर डाला।

6. संदेहवाचक वाक्य-जिस वाक्य में किसी कार्य के होने के बारे में संदेह प्रकट किया जाता है, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- वह शायद ही यह काम करे
- वह जयपुर चला गया होगा।

7. इच्छावाचक वाक्य-जिस वाक्य से किसी आशीर्वाद, कामना, इच्छा आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- ईश्वर तुम्हें दीर्घायु बनाए।
- जुग-जुग जियो।

8. संकेतवाचक वाक्य-जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे

- यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।
- वर्षा हुई तो गरमी कम हो जाएगी।

लेखन विभाग

अनुच्छेद – पुस्तकों का महत्व

पुस्तकें हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं क्योंकि पुस्तकों से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। पुस्तकें हमारी अच्छी मित्र होती हैं एक पुस्तक जितना वफादार और कोई नहीं होता है। एक पुस्तक ज्ञान तो हमें देती ही हैं इससे हमारा अच्छा ख़ासा मनोरंजन भी हो जाता है। इसीलिए पुस्तकों को हमारा मित्र कहना गलत नहीं होगा। पुस्तकें तो प्रेरणा का भंडार होती हैं इन्हें पढ़कर ही हमें जीवन में महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। पुस्तक अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाने का सबसे अच्छा साधन है। पुस्तकें प्रेरणा का भंडार होती हैं उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान काम करने की भावना जागती है महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता टॉलस्टॉय और थोरो का भरपूर योगदान था भारत की आजादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी प्रत्येक छात्र को अच्छी और शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर गहरा असर पड़ता है। इस पुस्तक को पढ़ने से धर्म के मार्ग पर चलने की सीख मिलती है। इसलिए मेरी दृष्टि में रामचरितमानस बहुत ही अच्छी पुस्तक है। रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का वर्णन है। राम एक आदर्श पुरुष थे। वे चौदह वर्ष तक लक्ष्मण व सीताजी सहित वन में रहे। वे एक आदर्श राजा थे। उन्होंने प्रजा की बातों को बहुत महत्व दिया। राम का शासनकाल आदर्शपूर्ण था इसलिए उनका शासन राम राज कहलाता है। सीता एक आदर्श नारी थी। लक्ष्मण की भातृभक्ति प्रशंसनीय है पुस्तकें चरित्र निर्माण का सबसे अच्छा साधन होती हैं अच्छे विचारों प्रेरणादायक कहानियों से भरपूर किताबों से देश की युवा पीढ़ी को एक नयी दिशा दी जा सकती है। इनसे ही देश में एकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है। इसीलिए पुस्तकें ज्ञान की बहती हुई गंगा हैं जो कभी नहीं थमती। किन्तु देखा गया है कि कुछ पुस्तकें ऐसी भी होती हैं जो हमारा गलत मार्गदर्शन करती हैं इसीलिए हमें ऐसी पुस्तकों को पढ़ने से बचना चाहिए हमेशा ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पुस्तकें ही पढ़नी चाहिए ।

➢ **गतिविधि- अपनी मन पसंदीदा पुस्तक के बारे में लिखिए।**

कविता-13 मैं सबसे छोटी होऊँ

- सुमित्रानन्दन पंत

➢ कविता का सार

प्रस्तुत कविता में एक बालिका अपनी माँ की सबसे छोटी संतान बनने की इच्छा रखती है। ऐसा करने से वह सदा अपनी माँ का प्यार और दुलार पाती रहेगी। उसकी गोद में खेल पाएगी। उसकी माँ हमेशा उसे अपने आँचल में रखेगी, उसे कभी अकेला नहीं छोड़ेगी। उसे लगता है कि वह सबसे छोटी होगी, तो माँ उसका सबसे अधिक ध्यान रखेगी। सबसे छोटी होने से उसकी मां उसे अपने हाथ से नहलाएगी, सजाएगी और संवारेगी। उसे प्यार से परियों की कहानी सुनाकर सुलाएगी। वह कभी बड़ी नहीं होना चाहती क्योंकि इससे वह अपनी माँ का सुरक्षित और स्नेह से भरा आँचल खो देगी।

➢ कठिन शब्द

1) अंचल
2) छलती
3) कर
4) सज्जित
5) गात
6) निस्पृह

➢ शब्दार्थ

1-अंचल- नदी का किनारा
2-छलती- सुविधा देना
3- कर- हाथ
4-सज्जित- सजा हुआ
5-गात-शरीर, देह
6- स्नेह- प्रेम

7-निस्पृह- इच्छारहित

8- निर्भय- भयहीन

9-चंद्रोदय- चंद्र के उदय होने की अवस्था

➢ बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क)"मैं सबसे छोटी होऊँ" कविता किसके द्वारा लिखी गई है?

(i) भगवत शरण उपाध्याय (ii) गुणाकर मुले

(iii) विष्णु प्रभाकर **(iv) सुमित्रानंदन पंत**

(ख)सबसे छोटी होने की कामना क्यों की गई है?

(i) अपनी जिम्मेदारियाँ न संभालने के लिए।

(ii) सदा माँ के साथ रहने के लिए

(iii) डर से बचने के लिए

(iv) सदा सुरक्षित रहने के लिए।

(ग) बच्ची किसके साथ रहने के लिए बड़ी नहीं होना चाहती?

(i) माँ (ii) पिता

(iii) दादा-दादी (iv) दोस्त

(घ) माँ के आँचल की छाया में बच्ची कैसा महसूस करती है?

(i) निर्भय (ii) उदास

(iii) भयभीत (iv) इनमें कोई नहीं

(ङ) बड़ी बनने का क्या नुकसान है?

(i) बड़ी बनने से माँ सदा साथ नहीं रहती

(ii) बड़ी होने पर कोई खिलौना नहीं देता

(iii) बड़ी होने पर कोई जन्म दिन नहीं मनाता

(iv) बड़ी होने पर शादी कर दी जाती है।

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. बालिका क्या नहीं छोड़ना चाहती?

उत्तर- बालिका माँ का आँचल नहीं छोड़ना चाहती है।

प्रश्न2. कविता में बच्ची छोटी क्यों बनी रहना चाहती है?

उत्तर- कविता में बच्ची सबसे छोटी बनी रहने की कामना इसलिए करती है ताकि उसे हमेशा माँ का साथ और माँ का प्यार मिलता रहे।

प्रश्न3. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है?

उत्तर- ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि बड़ी बनकर वह माँ का प्यार नहीं खोना चाहती। ऐसे बड़े बनने से क्या लाभ जिसमें माँ अपने हाथों न खिलाए न नहला कर तैयार करे।

प्रश्न4. माँ बच्चों को किस प्रकार छलती है?

उत्तर- माँ जब बच्ची को बड़ी बना देती है तब उसका साथ छोड़कर अपने कामों में लग जाती है और कभी- कभी वह बच्चों को खिलौने हाथ में पकड़ाकर अपने काम में लग जाती है। उसके साथ समय नहीं देती है। इस प्रकार माँ बच्चों को छलती है।

➢ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. बचपन सुहाना क्यों होता है?

उत्तर- बचपन में माँ का प्यार और सान्निध्य मिलता है। सारी चिंताएं माँ पर छोड़कर बच्चे मस्ती में रहा करते हैं। छोटी होकर ही माँ का हाथ पकड़ कर उनके साथ घूमते हैं। माँ के हाथ से खाना, मुँह धुलवाना, धूल पोंछवाना, छोटी होते हुए संभव होता है। माँ का आँचल पकड़ कर बच्चे घूमा करते हैं, माँ की गोदी में सोते हैं। बच्चों को सुखद परियों की कथा सुनने का मौका मिलता है। माँ

बच्च◌ो◌ं क◌ा हाथ कभी नह◌ी◌ं

छोड़ती। इसलिए बचपन सुहाना होता है।

प्रश्न 2. बड़े होने पर हम कैसे माँ से अलग हो जाते हैं?

उत्तर- बड़ा बनाकर माँ बच्चे को अपने से अलग करने लगती है क्योंकि बड़ा होने पर माँ दिन-रात हमारे साथ नहीं रह पाती है। वह पहले हमें खिलौने देकर अपने आप खेलने के लिए छोड़ देती है। फिर वह हमें विद्यालय भेजती है। विद्यालय में नए-नए मित्र बनते हैं। बच्चों पर जिम्मेदारी डाल दी जाती है। पढ़ाई की, परीक्षा की, गृहकार्य की, खेलकूद की इत्यादि। इस प्रकार हम धीरे-धीरे माँ से अलग हो जाते हैं।

प्रश्न 3. माँ के आँचल की छाया दुनिया की सबसे सुरक्षित स्थान है। कैसे?

उत्तर- माँ के आँचल की छाया संसार की सबसे सुरक्षित स्थान है। यहाँ हम बिना किसी डर, चिंता और फिक्र के रहते हैं। यहाँ हमें किसी प्रकार का खतरा महसूस नहीं होता। माँ हमें हर परेशानियों एवं खतरों से दूर रखती है। वह हमें लोगों की बुरी संगत और नजर से बचाती है। वह हमारी स्वास्थ्य और सफाई पर भी ध्यान रखती है। इसलिए माँ का आँचल दुनिया का सबसे सुरक्षित स्थान है।

व्याकरण

➤ मुहावरे और लोकोक्तियाँ

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है-अभ्यास। हिंदी भाषा को सुंदर और प्रभावशाली बनाने के लिए हम मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। मुहावरा ऐसा शब्द-समूह या वाक्यांश होता है जो अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है। विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने वाले ये वाक्यांश ही मुहावरे कहलाते हैं।

नीचे कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे दिए जा रहे हैं –

1) अगर-मगर करना (टाल-मटोल करना) – माँ ने अंकित से पढ़ने के लिए कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।
2) आँखें चुराना (अपने को छिपाना) – गलत काम करके आँखें चुराने से कुछ नहीं होगा।
3) आँखें खुलना (होश आना) – जब पांडव जुए में अपना सब कुछ हार गए तो उनकी आँखें खुलीं।
4) आँखों का तारा (अतिप्रिय) – हर बेटा अपनी माँ की आँखों का तारा होता है।
5) आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना) – ठग यात्री की आँखों में धूल झोंककर उसका सामान लेकर भाग गया।
6) आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर करना) – अध्यापक के कक्षा से चले जाने पर बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
7) ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) – अरे आयुष! कहाँ रहते हो? तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।
8) कान भरना (चुगली करना) – विशाल को कान भरने की बुरी आदत है।
9) खाक छानना (दर-दर भटकना) – नौकरी की तलाश में बेचारा मोहन खाक छान रहा है।
10) कमर कसना (चुनौती के लिए तैयार होना) – भारतीय सैनिक हर संकट के लिए कमर कसे रहते हैं।
11) खून-पसीना एक करना (कठोर परिश्रम करना) – खून-पसीना करके ही हम, अपने लक्ष्य तक

पहुँच सकते हैं।

12) खून का प्यासा (जान लेने पर उतारू होना) – जायदाद बटिारे की समस्या ने दोनों भाइयों को एक-दूसरे के खून का प्यासा बना दिया।

13) ईंट-से ईंट बजाना (विनाश करना) – पांडवों ने कौरव-सेना की ईंट-से ईंट बजा दी।

14) ईमान बेचना (बेईमान होना) – आजकल सीधे-सादे आदमी को असानी से उल्लू बनाया जा सकता है।

15) होश उड़ जाना (घबरा जाना)-अपने सामने जीते – जागते शेर को देखकर मेरे होश उड़ गए।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का अथ होता है-लोक की उक्ति अथात लोगों द्वारा कही गई बात। इसमें लौकिक जीवन का सत्य एवं अनुभव समाया होता है, ये स्वयं में एक पूण वाक्य होती है; जैसे-अधजल गगरी छलकत जाए। इसका अथ है- कम जानकार द्वारा अपने गुणों का बखान करना।

लोकोक्ति के कुछ प्रचलित उदाहरण

1) अंधों में काना राजा (मूखा में कम पढ़ा लिखा व्यक्ति) – हमारे गांव में एक कंपाउंडर ही लोगों का इलाज करता है, सुना नहीं है-अंधों में काना राजा।
2) अंधा चाहे दो आखें (जिसके पास जो चीज नहीं है, वह उसे मिल जाना) – आयुष को एक घर की चाह थी, वह उसे मिल गया ठीक ही तो है–अंधा चाहे दो आखें।
3) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (काम खराब हो जाने के बाद पछताना बेकार है) – पूरे वषतो पढ़े नहीं अब परीक्षा में फेल हो गए, तो आसू बहा रहे हो। बेटा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।।
4) आटे के साथ घुन भी पिस जाता है (अपराधी के साथ निदोष भी दंड भुगतता है) – क्षेत्र में दंगा तो गुंडों ने किया, पुलिस दुकानदारों को भी पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं, आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।
5) आगे नाथ न पीछे पगहा (जिम्मेदारी का न होना) – पिता के देहांत के बाद रोहन बिलकुल स्वतंत्र हो गया है। आगे नाथ न पीछे पगहा।।
6) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना) – बार-बार दल-बदल करने वाले नेता की स्थिति धोबी के कुत्ते ' जैसी हो जाती है, वह ने घर का न घाट का रह जाता है।
7) खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक परिश्रम कम लाभ) – सारा दिन परिश्रम के बाद भी कुछ नहीं मिला।
8) आ बैल मुझे मार (जान बूझकर मुसीबत मोल लेना) – बेटे के जन्मदिन पर पहले सबको बुला लिया अब खर्चे का रोना रोता है। सच है आ बैल मुझे मार।
9) नाच न जाने आगन टेढ़ा (काम तो आता न हो, दूसरों में दोष निकालना) – कहते काम करना तो आता नही,हो औजार खराब है। इसी को कहते हैं नाच न जाने आगन टेढ़ा।
10) भीगी बिल्ली बनना (दबकर रहना) – लाला की नौकरी करना है, तो भीगी बिल्ली बनकर रहना पड़ेगा।

लेखन-णिभाग

यह दृश्य क्रकस◌ी मह◌ानगर के ि◌◌ौराह◌े क◌ा ह◌ै। ल◌ाल बत्ती होन◌े के क◌ारण ग◌ाक्रड़य◌ा रुक◌ी हुई ह◌ै◌ं। ि◌◌ु टप◌ाथ पर एक बच्च◌ा एक ि◌◌ृद्ध मक्रहल◌ा क◌ो सड़क पार करि◌ा रहा ह◌ै। एक व्यक्तक्त अपन◌े स्कू टर क◌ो आध◌े ि◌◌ु टपाथ तक ल◌े आया ह◌ै यह क्रनयम के क्रिरुद्ध ह◌ै य◌ाताय◌ात के क्रलए बनाए गए क्रनयम◌ो◌ं क◌ा पालन न करन◌े स◌े ह◌ी द◌ु घटनाए होत◌ी ह◌ै◌ं। कु छ ल◌ोग हर◌ी बत्ती होन◌े क◌ा इ◌ंतजार नह◌ी◌ं करत◌े और ग◌ाड़◌ी द◌ौड़◌ाकर ल◌े जात◌े ह◌ै◌ं। ऐस◌ा करत◌े समय ग◌ाक्रड़य◌ा परस्पर टकरा जाती ह◌ै◌ं और द◌ु घटना ह◌ो जाती ह◌ै। अत◌ः ि◌◌ाहन ि◌◌ल◌ात◌े समय यात◌ायात के

➢ **गणतणा◌िणध-** अपन◌ी मम्म◌ी के ब◌ार◌े म◌े◌ं दस ि◌◌ाक्य क्रलक्तखए |

रामबाल-कथा
पाठ-९ राम और सुग्रीव

प्रश्न- सुग्रीव के बड़े भाई का क्या नाम था? उत्तर - सुग्रीव के बड़े भाई का नाम बाली था।

प्रश्न- सुग्रीव के प्रमुख साथी कौन थे?

उत्तर - सुग्रीव के प्रमुख साथी हनुमान थे।

प्रश्न- सुग्रीव सीता हरण का सुनकर अचानक क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर - सुग्रीव सीता हरण का सुनकर अचानक उठ खड़े हुए क्योंकि वानरों ने उन्हें एक स्त्री हरण की बात बताई थी।

प्रश्न- सुग्रीव ने राम को अपनी क्या व्यथा सुनाई?

उत्तर- सुग्रीव ने राम को बताया कि बाली ने उसे राज्य से निकाल दिया । उसकी स्त्री छीन ली और उसका वध करने की चेष्टा कर रहा है । हनुमान, नल और नील ने उसका साथ दिया है ।

प्रश्न- सुग्रीव राम से क्यों कुपित था?

उत्तर- सुग्रीव राम से इसलिए कुपित था क्योंकि राम पेड़ के पीछे खड़े थे परन्तु धनुष हाथ होने पर भी उन्होंने सुग्रीव को बचाने के लिए तीर नहीं चलाया

प्रश्न- किसने सुग्रीव को उनका राम को दिया वचन याद दिलाया? उत्तर- हनुमान ने सुग्रीव को उनका राम को दिया वचन याद दिलाया ।**प्रश्न- वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने किसे दिया?**

उत्तर- वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने सेनापति नल को दिया ।

प्रश्न- राम सुग्रीव के किस व्यवहार से क्षुब्ध थे?

उत्तर - राम सुग्रीव से इसलिए क्षुब्ध थे क्योंकि उन्होंने अपनी वानरसेना अभी तक नहीं भेजी थी ।

प्रश्न- राम ने सुग्रीव को अपनी शक्ति का परिचय किस प्रकार दिया?

उत्तर - राम ने अपनी शक्ति का परिचय तीर चला के दिया । शाल के सातों विशाल वृक्ष उनके एक ही बाण से कटकर गिर पड़े ।

प्रश्न- वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने किसे दिया?

उत्तर- वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने सेनापति नल को दिया।

प्रश्न- राम सुग्रीव के किस व्यवहार से क्षुब्ध थे?

उत्तर- राम सुग्रीव से इसलिए क्षुब्ध थे क्योंकि उन्होंने अपनी वानरसेना अभी तक नहीं भेजी थी।

प्रश्न- तारा ने सुग्रीव को क्या सलाह दी?

उत्तर - तारा ने सलाह दी कि सुग्रीव तत्काल जाकर राम से मिलें और क्षमा याचना करें।

प्रश्न- जामवंत के पीछे किसकी सेना थी?

उत्तर - जामिंत के पीछे भालुओं की सेना थी।

प्रश्न- हनुमान, नल और नील किस दल में थे?

उत्तर - हनुमान, नल और नील दक्षिण जाने वाले अग्रिम दल में थे।

प्रश्न- लंकारोहण के लिए वानरों की कितनी टोलियाँ बनीं और अंगद को किस दल का नेता बनाया गया?

उत्तर - लंकारोहण के लिए वानरों की चार टोलियाँ बनी और अंगद को दक्षिण जाने वाले अग्रिम दल का नेता बनाया गया।

प्रश्न- राम ने अपनी अँगूठी किसे दी और उससे क्या कहा?

उत्तर - राम ने अपनी अगूठी हनुमान को दी और उनसे कहा कि जब सीता से भेंट हो तो उन्हें ये मेरी अगूठी दे देना। वे इसे पहचान जाएगी।

प्रश्न- जटायु के भाई का क्या नाम था?

उत्तर - जटायु के भाई का संपाक्रत नाम था।

कविता-14 लोकगीत

- भगवतीशरण उपाध्याय

➢ पाठ का सार

मनोरंजन की दुनिया में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है|गीत संगीत के बिना हमारा मन नीरस हो जाता है|हमारी जीवन में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है|लोकगीत उपनी ताजगी और लोकप्रियता से शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं|ये सीधे जनता का संगीत हैं|ये गाँव जनता का संगीत है|इस के लिए प्रत्येक साधना कीजरुरत नहीं हैं|त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गीत गाये जाते है|ये गीत बाजों ढोलक,करताल,बांसुरी,आदि की मदद से गाये जाते हैं| लोकगीत कई प्रकार के होते हैं|इनका एक एक प्रकार बहोत सजीव हैं|यह इस देश का आदिवासियों का संगीत हैं|पुरे देश भर ये फैले हुए है|अलग अलग राज्योमे,अलग-अलग भाषाओ में रंगबी रंगी फूलों की माला की तरह ये बने है|सभी लोकगीत गाँवों की बोलियों में गाये जाते हैं|चैता, कजरी,बारहमास,सावन आदि उत्तरप्रदेश और बनारस में गाये जाते हैं|बाउल ,भटियाली,बंगला के लोकगीत हैं|राजस्थान में ढोलामारू,भोजपुर में बिदेशिया प्रसिद्ध है|एक दूसरों को जवाब के रूप में दल में बांटके भी ये गीत गाया जा सकता है|जाने के सात नाचना भी होता है|

➢ कठिन शब्द

1) लोच	2) झांझ
3) करताल	4) हेय
5) आहदकर	6) सिरजती

➢ शब्दार्थ

1) लोच – लचीलापन	2) करताल- तालियां
3) झांझ – एक वाद्य यंत्र	4) हेय -हीन

5) क्रनद्रन्द्र – क्रबना क्रकसी दुक्रािधा के 6) मम को छूना- िभाक्रित करना
7) क्रसरजती- बनाती 8) पुट – अंश

➢ बहुणिकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) "लोकगीत' पाठ के लेखक कौन हैं?

(i) ि◌◌ेम◌ि◌◌ंद (ii) क्रिष्ण◌ु ि◌भाकर

(iii) क्रिनय महाजन **(iv) भगितशरि उपाध्यार्**

(ख) लोकगीतों की भाषा कै सी होती है?

(i) संस्कृ तक्रनष्ठ (ii) शास्त्रीय

(iii) आम बोलचाल (iv) अनगढ़

(ग) लोकगीत शास्त्रीय संगीत से क्रकस मायने में क्रभन्न है?

(i) लय, सुर और ताल में (ii) मधुरता में

(iii) सोच, त◌ाजगी और ल◌ोकणप्रर्त◌ा म◌े◌ं

(iv) इनमें कोई नहीं

(घ) लोकगीतों की रिना में क्रकसका क्रिशेष योगदान है?

(i) बच्चों का **(ii) स्ि◌र्◌ो◌ं का**

(iii) पुरुषों का (iv) इनमें कोई नहीं

(ङ) इनमें से कौन बंगाल का लोकगीत है?

(i) कजरी **(ii) बाउल**

(iii) पूरबी (iv) सािन

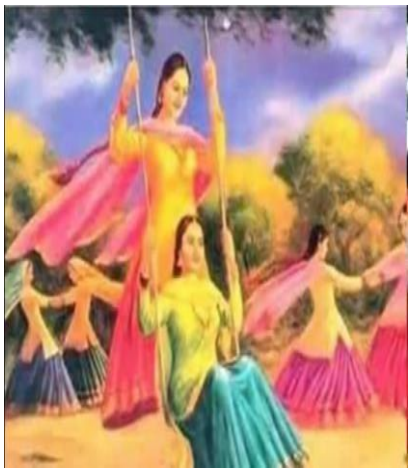

➢ अणतलघ◌ु उत्तर◌ीर् प्रश्न◌ोत्तर

प्रश्न 1. ल◌ोकगीत णकस अथ म◌े◌ं श◌ाि◌◌◌◌◌ीर् स◌ंगीत स◌े णभन्न ि◌ै?

उत्तर- ल◌ोकग◌ीत अपन◌ी स◌ोि◌, ताजग◌ी तथा ल◌ोकक्रियता क◌ी दृक्रि स◌े शास्त्र◌ीय स◌ंग◌ीत स◌े क्रभन्न ह◌ै। इस ग◌ीत क◌ो ग◌ान◌े के क्रलए श◌ास्त्रीय स◌ंग◌ीत ज◌ैस◌ी साधना क◌ी जरूरत नह◌ी◌ं होत◌ी ह◌ै।

प्रश्न 2. ल◌ोकगीत◌ो◌ं क◌ी क्रय◌ा णि◌श◌ेषत◌ा ि◌ै?

उत्तर- ल◌ोकग◌ीत सीध◌े जनत◌ा के ग◌ीत ह◌ै◌ं। इसके क्रलए क्रिश◌ेष ि◌यत्न क◌ी आिश्यकत◌ा नह◌ी◌ं पड़◌ती। य◌े त्य◌ोहार◌ो◌ं और क्रिश◌ेष अिसर◌ो◌ं पर स◌ाध◌ारण ढोलक और झ◌ांझ आक्रद क◌ी सहायता स◌े ग◌ाए जात◌े ह◌ै◌ं। इसके क्रलए क्रिश◌ेष ि◌कार के ि◌◌ाद्यों की आिश्यकता नहीं होती।

प्रश्न 3. ल◌ोकगीत णकसस◌े ज◌ुड़◌े ि◌ै◌ं?

उत्तर- ल◌ोकग◌ीत सीध◌े आम जनता स◌े ज◌ुड◌़◌े ह◌ै◌ं? य◌े घर, ग◌ाि◌ और नगर क◌ी जनता के ग◌ीत ह◌ै◌ं।

प्रश्न 4. ि◌◌ास्तणि◌क लोकग◌ीत◌ो◌ं का स◌ंब◌ंध कि◌◌ा◌ा◌ँ स◌े ि◌ै?

उत्तर- ि◌◌ास्तक्रिक ल◌ोकग◌ीत◌ो◌ं क◌ा स◌ंब◌ंध द◌ेश के ग◌ाि◌◌ो◌ं और द◌ेहात◌ो◌ं स◌े ह◌ै।

प्रश्न 5. स्ि◌र◌्◌ा◌ा◌ँ ल◌ोकगीत ग◌ात◌े समर् णकस ि◌◌ाद्य का प्रर्◌ोग करत◌ी ि◌ै◌ं? उत्तर- क्तस्त्रय◌ा ि◌◌ाय ढ◌ोलक क◌ी मदद स◌े ल◌ोकग◌ीत ग◌ाती ह◌ै◌ं?

➢ लघु उत्तरीर् प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. ि◌म◌ार◌े र्ि◌◌ा◌ा◌ँ स्ि◌र◌्◌ो◌ं के ख◌ास गीत क◌ौन-कौन स◌े ि◌ै◌ं?

उत्तर- हम◌ार◌े यह◌ा कु◌ छ ल◌ोकग◌ीत ऐस◌े ह◌ै◌ं क्रजन्ह◌े◌ं क्तस्त्रय◌ो◌ं के खास ग◌ीत कह◌ा जा सकता ह◌ै। ऐस◌े ग◌ीत◌ो◌ं म◌े◌ं त्य◌ोहार◌ो◌ं पर, नक्रदय◌ो◌ं म◌े◌ं नहात◌े समय के, नहान◌े जात◌े हुए राह म◌े◌ं ग◌ाए जान◌े ि◌◌ाल◌े, क्रिि◌◌ाह के मटक◌ोड के, ज्य◌ौनार के स◌ंब◌ंक्रधय◌ो◌ं के क्रलए ि◌◌ेमयु◌क्त ग◌ाल◌ी के, जन्म आक्रद अिसर◌ो◌ं पर ग◌ाए जान◌े ि◌◌ाल◌े ि◌म◌ुख ह◌ै◌ं। होल◌ी के अिसर पर एि◌◌ं बरसात क◌ी कजरी भी क्तस्त्रय◌ो◌ं के खास ग◌ीत ह◌ै◌ं।

इसके अक्रतररक्त सोहर, ब ानी, स ेहर ा आक्रद उनके
अनंत गानों में से कु छ हैं।

प्रश्न 2.भ ारत के ण ि णभन्न प्रद े श ो ं म े ं क ौन-कौन स े ल ोकगीत गाए जात े ि ै ं?

उत्तर-भारत केक्रिक्रभन्न ि ा ंतों में क्रिक्रभन्न िकार के लोकगीत गाए जाते हैं। पहाक्रड़यों के अपने-अपने गीत हैं।

उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें एकसमान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, कांगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूरबी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-रांझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत राजस्थान में गाए जाते हैं।

प्रश्न 3. स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों की क्या विशेषता है?

उत्तर- गाँवों में स्त्रियाँ प्राचीन काल से ही लोकगीत गाती आ रही हैं? इनके गीत आमतौर पर दल बाँधकर ही गाए जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं। यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। स्त्रियाँ ढोलक के साथ गाती हैं। प्रायः उनके गीत के साथ नाच भी जुड़ा होता है।

➢ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) निबंध के आधार पर और अपने अनुभव के आधार पर यदि तुम्हें लोकगीत सुनने के मौके मिले हैं तो – तुम लोकगीतों की कौन सी–विशेषताएँ बता सकते हो।

उत्तर– लोकगीतों की अपनी कई विशेषताएँ हैं

– लोकगीतों को सुनने से ही हमें अपने मिट्टी से जुड़ाव का अनुभव होता है।
– लोकगीत हमें गाँव के जीवन से परिचित कराते हैं।
– इनके साथ बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र अत्यंत सरल होते
– हैं।इन गीतों से मन में उत्साह और उमंग का संचार होता है।
इन गीतों को गाने के लिए किसी विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।
- ये सरल और सहज गीत होते हैं।
– इनके रचनाकार स्त्री और पुरुष दोनों होते हैं।
– ये क्षेत्रीय या आम बोलचाल के भाषा में गाए जाते हैं ।

2) **'पर सारे देश के अपने अपने विद्यापति हैं' इस वाक्य का क्या अर्थ है?**

उत्तर कवि विद्यापति बहुत प्रसिद्ध कवि हैं। उन्हें मैथिल कोकिल भी कहा जाता है ।आज भी विद्यापति के गीत पूरब में हमें सुनने के लिए मिलते–हैं।पर सारे देश के अपने अपने – विद्यापति हैं इस वाक्य का लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि अपने अपने इलाके में जो लोग इस प्रकार के लोकगीतों की रचना करते हैं वे विद्यापति के समान हैं।

3) **जैसे जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या असर पड़ रहा है?**

उत्तर अब गाँव भी शहरीकरण से अछूते नहीं रह गए हैं। सिनेमा घर घर टेलीविजन मनोरंजन के सस्ते साधन उपलब्ध हो जाने के कारण भी अब

लोकगीत कम होते जा
रहे हैं यहां तक कि शादी विवाह जैसे पवित्र अवसरों पर भी लोकगीत नहीं सुनाई देते अब लोग भी लोकगीतों की जगह फ़िल्मी गीत सुनना ज़्यादा पसंद करते हैं जिनमें लोकगीतोंकी सरसता की जगह केवल शोर- शराबा ही सुनाई देता है । कई बार शब्दों के माधुर्य की जगह हड़ शब्द का शोर ही सुनाई पड़ता है ।

व्याकरण

➢ अनेक शब्दों के एक शब्द :

हिंदी शब्दों में अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। अथात हिंदी भाषा में कई शब्दों की जगह पर एक शब्द बोलकर भाषा को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। हिंदी भाषा में अनेक शब्दों में एक शब्द का प्रयोग करने से वाक् के भाव का पता लगाया जा सकता है।

इतिहास से सबध रखने – ऐतिहासिक
एक सप्ताह में होने वाला साप्ताहिक
ऋषियों के रहने का स्थान आश्रम
कठिनता से प्राप्त होने वाला – दुर्लभ
किसी से भी न डरना वाला – भ
किसी प्राणी को न मारना – निडर
जिस स्त्री का पति जीवित हो अहिंसा
जिसकी कोई सीमा न हो– सधवा
जहाँ लोगों का असीम मिलन
हो सम्मेलन
जो आँखों के सामने – अहतहथ
न हो वन में रहने – वनवासी
वाला मनुष्य तेज गति से – द्रुतगामी
चलने वाला – अकारण

लेखन-विभाग

➢ कहानी लेखन – सारस और लोमड़ी की कहानी

एक बार एक लोमड़ी ने अपने दोस्त सारस को खाने की न्यौता दिया और खाने में खीर बनाया और उसे बड़े थाली में परोस दिया फिर सारस और लोमड़ी थाली में परोसे खीर को खाने लगे थाली काफी चौड़ी थी जिससे सारस के चोच में खीर की थोड़ी ही मात्रा आ पाती थी जबकि लोमड़ी अपने जीभ से जल्दी जल्दी सारा खीर खा लिया जबकि सारस का पेट भी नहीं भरा था जिससे लोमड़ी अपनी चतुराई से मन ही मन खुश हुई तो फिर सारस ने भी लोमड़ीको खाने का न्योता दिया फिर अगले दिन सारस ने भी खीर बनाया और और लम्बे सुराही मेंभर दिया जिसके बाद दोनों खीर खाने लगे सारस अपने लम्बे चोच की सहायता से सुराही में खूब खीर खाया जबकि लोमड़ी सुराही लम्बा और उसका मुँह छोटा होने के कारण वह तक पहुँच नहीं पाता जिसके कारण वह सुराही पर गिरे हुए खीर को चाटकर संतोष किया फिर
इस प्रकार सारस ने अपने अपमान का बदला ले लिया और लोमड़ी को अपने द्वारा किये हुए इस व्यवहार पर बहुत पछतावा हुआ ।

कहानी से शिक्षा – जैसे को तैसा की सोच आधारित यह कहानी हमें यही सिखाती है की हमें कभी भी किसी का अपमान नहीं करना चाहिए ऐसा अपमान अपने साथ भी हो सकता है

रामबाल-कथा
पाठ- 10 लंका में हनुमान

प्रश्न- सम◌ुद्र के अदर कौन सा पवत था?
उत्तर- सम◌ुद्र के अदर म◌ै न◌ाक पवत था।
प्रश्न- ि◌न◌ुम◌ान क◌ी परछाई सम◌ुद्र म◌े◌ं कै स◌े हदखत◌ी थ◌ी?
उत्तर - ि◌नुमान की परछाई समुद्र में नाव की तरि हदखती ।
प्रश्न- स◌ुरसा कौन थ◌ी और वि◌ क्य◌ा च◌ाि◌त◌ी थी?
उत्तर - स◌ुरसा हवर◌ाि◌ शरीर वाली राक्षस◌ी थी और वि ि◌न◌ुमान क◌ो खा जाना च◌ाि◌त◌ी थी ।
प्रशन- लका नगर◌ी क◌ो ठ◌ीक स◌े द◌े खन◌े के हलए ि◌न◌ुम◌ान न◌े क्य◌ा हकय◌ा?
उत्तर - लक◌ा नगरी क◌ो ठ◌ीक स◌े द◌े खन◌े के हलए ि◌न◌ुमान एक पि◌ा◌़ि◌ी पर चढ़ गए ।
प्रश्न- रावण की रानी का क्य◌ा नाम था?
उत्तर- रावण क◌ी रानी क◌ा नाम मद◌ोदरी था।
प्रश्न- राक्षसी हत◌्जि◌ा न◌े सपन◌े म◌े◌ं क्य◌ा द◌े ख◌ा?
उत्तर- हत◌्जिा न◌े सपन◌े म◌े◌ं द◌े खा हक प◌ू री लक◌ा सम◌ुद्र म◌े◌ं ड◌ू ब गई ि◌ै।
प्रश्न- ि◌न◌ुमान न◌े सीत◌ा के मन क◌ी शक◌ा क◌ो कै स◌े द◌ू र हकय◌ा?
उत्तर - ि◌न◌ुमान न◌े पवत पर फे◌े◌ं के आभ◌ू ि◌ण◌ो क◌ी य◌ाद हदल◌ाकर सीत◌ा के मन के सद◌े ि◌ क◌ो द◌ू र हकय◌ा ।
प्रश्न- रावण के प◌ुत् अक्षक◌ु म◌ार क◌ी म◌ृ त्य◌ु कै स◌े हई?
उत्तर - रावण के पुत् अक्षकु मार की मृत्यु ि◌नुमान से ि◌िते हए हई।
प्रशन- ि◌न◌ुम◌ान अशोक वाहिका क◌ी ओर क्य◌ो भ◌ाग◌े?
उत्तर- ि◌न◌ुमान क◌ो स◌ीता क◌ी हचता थी। उन्ह◌े◌ं डर था हक कि◌ी आग उन तक न पह◌ुँच गई ि◌ो इसहलए ि◌न◌ुमान अशोक वाहिका की ओर भागे।
प्रश्न- ि◌न◌ुम◌ान क◌ो उनक◌ी शस्क्त की र्◌ाद ण्दलान◌े म◌े◌ं कौन सफल ह◌ुए? उत्तर - हन◌ुमान क◌ो उनक◌ी शक्तक्त क◌ी य◌ाद क्रदल◌ान◌े म◌े◌ं जामि◌ि◌त सि◌ल हुए । **प्रश्न- ि◌न◌ुम◌ान छल◌ा◌ा◌ँग कर णकस पि◌ि◌त पर जा खड़◌े ह◌ुए?**
उत्तर - हन◌ुमान छल◌ाग कर मह◌े◌ं द्र पि◌ि◌त पर जा खड◌़◌े हुए ।
प्रश्न- ि◌न◌ुम◌ान णकस प्रक◌ार राक्षसी स◌ुरसा को द◌े कर ण्नकल आ
उत्तर -हन◌ुमान उस◌े ि◌कम◌ा द◌े कर उसके मह म◌े◌ं घ◌ुसकर क्रनक

प्रश्न- हनुमान को क्या चिंता थी?
उत्तर- हनुमान को चिंता थी कि वह सीता को कैसे ढूंढेंगे और कैसे पहचानेंगे?
प्रश्न- लंका नगरी को ठीक से देखने के लिए हनुमान ने क्या किया?
उत्तर - लंका नगरी को ठीक से देखने के लिए हनुमान एक पहाड़ी पर चढ़ गए ।

पाठ- 15 नौकर

- अनु बधोपाध्यार्

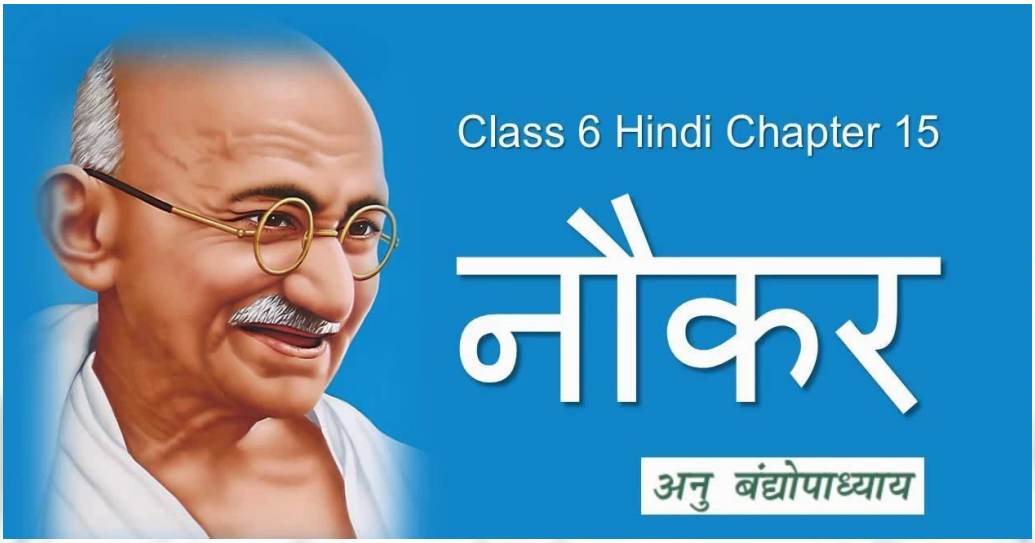

➢ पाठ का सार

नौकर ' पाठ अन‍ु ब‍ंद‍ोपाध्य‍ाय द्व‍ारा ‍लखा गय‍ा ह‍ै | ि‍स्त‍ुत पाठ म‍े‍ं ग‍ाध‍ी जी क‍े ब‍ार‍े म‍े‍ं ि‍णन ‍क‍या गय‍ा ह‍ै | ग‍ाध‍ी जी अपन‍ा क‍ाम स्वय‍ं करत‍े थ‍े | ि‍ह शारीररक पररश्रम स‍े कभी भी मन‍ा नह‍ी‍ं करत‍े ह‍ै | ि‍ह आश्रम म‍े‍ं छोट‍े-छोट‍े क‍ाम स्वय‍ं करत‍े थ‍े , ज‍ैस‍े आट‍ा ‍पसना , पान‍ी ल‍ाना , खाना बनाना | ग‍ाध‍ी जी आश्रम म‍े‍ं स‍ाि‍ ‍ाई स्वय‍ं करत‍े थ‍े , ि‍ह अपन‍े झठ‍े बतन भी स‍ाि‍ करत‍े थ‍े | ि‍ह अपन‍ा क‍ाम द‍ूसर‍ो‍ं स‍े कभी नह‍ी‍ं करि‍ात‍े थ‍े |

आश्रम क‍ो घर‍े ल‍ू नौकर‍ो‍ं क‍ो पररि‍ार क‍ी तरह रखत‍े थ‍े , आश्रम म‍े‍ं नौकर‍ो‍ं नह‍ी‍ं मान‍ा जाता था | ग‍ाध‍ी जी कहत‍े थ‍े ‍क आप म‍ेरी स‍ेि‍ ‍ा करत‍े ह‍ै , उसक‍ा म‍ूल्य म‍ै‍ं नह‍ी‍ं द‍े सकता ह , ल‍े‍‍कन ई‍ि‍र आपक‍ो जरूर द‍ेग‍ा |

➢ कणठन शब्द

1) कौपनधारी
2) हैरत
3) छात्र
4) आंगतुक
5) प‍े‍ंद‍ी
6) क‍ा‍‍लख
7) तश्तररय‍ो‍ं
8) स‍ि‍ ‍था

➢ शब्दाथ

1-कौपनधारी- लंगोट धारण करनेवाला
2-हरत- चमत्कार, अचंभा
3-छात्र- विद्यार्थी
4-आगंतुक- अतिथि
5-पेंदी- तल, आधार
6-कालिख- कलंक
7-क्षमता-योग्यता
8-तश्तरियों- छोटी रकाबी
9-सर्वथा- पूरा, स्पष्टवादी
10-सामर्थ्य- क्षमता

➢ अहतलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1- ग‍ाध‍ी जी घर क‍े ‍हलए ‍आ‍ि‍ ‍ा क‍ैस‍े त‍ैयार ‍करत‍े थे

उत्तर ग‍ाध‍ी जी जरूरत क‍ा म‍ि‍ ‍ीन य‍ा मो‍ि‍ ‍ा-‍आ‍ि‍ ‍ा स‍ुब‍ि‍ शाम चक्की स‍े पीसकर त‍ैयार कर लेते थे।

2- ग‍ाध‍ी द्व‍ारा भ‍ोजन परोसन‍े क‍े कारण आश्रमव‍ा‍हसय‍ो क‍ो क्य‍ा ‍सिना ‍पड़त‍ा था

उत्तर- उनको ब‍े‍ि‍ ‍ाद भोजन खाकर ‍ि‍ ‍ी रिना ‍पिता था।

3- ब◌ोअर य◌ुद्ध के द◌ौरान ग◌ाध◌ी ज◌ी न◌े क्य◌ा हकया

उत्तर- ब◌ोअर-य◌ुद्ध के द◌ौरान ग◌ाध◌ी जी न◌े घायल◌ो क◌ो स्ट◌ेचर पर ढोय◌ा था।

4- ग◌ाध◌ी जी हलखत◌े समय हकस बात क◌ा ध्य◌ान रखत◌े थ◌े ?

उत्तर -ग◌ाध◌ी जी रात क◌ो ल◌ालि◌ेन क◌ी रोशनी म◌ें पत◌्र हलखत◌े थ◌े। जब त◌ेल खत्म ि◌ो जाता तब वे चंद्रम◌ा क◌ी रोशनी म◌ें पत◌्र प◌ूरा करत◌े थ◌े।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1- आश्रम के हनम◌ाण के समय कौन स◌ी घि◌न◌ा घहित हई

उत्तर -आश्रम के हनम◌ाण के समय वि◌ाँ◌ु आन◌े वाल◌े म◌ेि◌म◌ान◌ो क◌ो तब◌ुओ म◌ें सोन◌ा प◌्ि◌ता था। एक नवागत क◌ो पत◌ा नि◌ी था हक अपन◌ा हबस्तर कि◌ाँ◌ु रखना चाहिए इसहलए उसन◌े हबस्तर को लप◌ेि◌कर रख हदय◌ा और यि पत◌ा लग◌ान◌े गय◌ा हक उस◌े कि◌ाँ◌ु

2- रखना ि◌ै। ल◌ौि◌त◌े समय उसन◌े द◌ेखा हक ग◌ाध◌ी जी ख◌ुद उसक◌ा हबस्तर क ध◌े पर उठाए रखन◌े चल◌े जा रि◌े ि◌ैं।

न◌ौकर◌ो के ब◌ार◌े म◌ें ग◌ाध◌ी ज◌ी के क्य◌ा हवच◌ार थ◌े ?

उत्तर - ग◌ाध◌ी जी नौकर◌ो क◌ो भी अपन◌े भाइय◌ो के सम◌ान मानत◌े थ◌े। उनक◌ा हवच◌ार था हक न◌ौकर

वेतन लेने वाले मजदूर नि◌ी। ि◌में उनके साथ सदैव भाई जैसा व्यवि◌ार करना चाहिए।

3- आश्रम म◌ें हकसी सि◌ायक क◌ो रखत◌े समय ग◌ाध◌ी जी क◌ा क्य◌ा क्य◌ा आग्रि ? रि◌त◌ा था क्य◌ो

उत्तर -आश्रम म◌ें हकस◌ी सि◌ायक क◌ो रखत◌े समय ग◌ाध◌ी जी इस ब◌ात क◌ा आग्रि करत◌े थ◌े हक ञ ,

ि◌ररजन क◌ो रख◌ा जाए। उनक◌ा कि◌न◌ा था हक , नौकर◌ो क◌ो

ि◌म◌ें व◌ेतनभोग◌ी मजद◌ूर नि◌ी अपने भाई के समान समझना चाहिए। इससे कु

➢ दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1- आश्रम म◌ें कॉल◌ेज के छ◌ात◌्र◌ो स◌े ग◌ाँ◌ुध◌ी-जी न◌े क◌ोन सा काम करवाया और क्य◌ो? उत्तर आश्रम म◌ें क◌ॉल◌ेज के छात◌्र◌ो स◌े ग◌ाँ◌ुध◌ी जी न◌े ग◌ेंह◌ुँ ब◌ीनन◌े क◌ा क◌ाम करवाया।एक ब◌ार

ग◌ाँ◌ुध◌ी जी स◌े हमलन◌े के हलए क◌ॉल◌ेज के क◌ुछ छात◌्र आए थ◌े। उन सभ◌ी क◌ो अपन◌े अग्र◌ेजी

ज्ञान पर ब◌्ि◌ि◌ा गव था। ब◌ातचीत के द◌ौरान छात◌्र◌ो न◌े उनस◌े क◌ाय म◌ाँ◌ुग◌ा छात◌्र◌ो -क◌ो लग◌ा हक ग◌ाँ◌ुध◌ी जी उन्ह◌ें पढ़न◌े हलखन◌े स◌े सबहधत क◌ोई क◌ाय द◌ेंग◌े ग◌ाँ◌ुध◌ी जी उनक◌ी इस मश◌ा को

भ◌ाँ◌ुप गए और ग◌ाँ◌ुध◌ी जी न◌े छात◌्र◌ो क◌ो ग◌ेंह◌ुँ ब◌ीनन◌े क◌ा क◌ाय सौप हदया। वास्तव म◌ें इस क◌ाय

द्व◌ारा ग◌ाँ◌ुध◌ी जी छ◌ात◌्र◌ो क◌ो समझाना च◌ाि◌त◌े थ◌े हक क◌ोई क◌ाय छोि◌ा

2 य◌ा ब◌्ि◌ा नि◌ी ि◌ोत◌ा। ?

- लदन म◌ें भ◌ोज पर ब◌ुलाए जान◌े पर ग◌ाँ◌ुध◌ी जी न◌े क्य◌ा हकया

उत्तर:-दहक्षण अफ्र◌ीक◌ा म◌ें रिन◌े वाल◌े भारतीय◌ो-क◌े जान◌े मान◌े न◌ेता के रूप म◌ें ग◌ाँ◌ुध◌ी भारतीय प्रवाहसय◌ो क◌ी म◌ाँ◌ुग◌ो क◌ो हिहिश सरकार के सामन◌े रखन◌े के हलए एक ब◌ार लदन गए।

वि◌ाँ◌ु उन्ह◌ें भारतीय छात◌्र◌ो न◌े एक श◌ाक◌ाि◌ारी भोज म◌ें हनमहत◌्त हकय◌ा।

छात्रों ने इस अवसर
के लिए स्वयं ही शाकाहारी भोजन तैयार करने का निश्चय किया था।
तीसरे पहर दो बजे एक दुबला पतला और छरहरा आदमी आकर उनमें शामिल हो
गया और तश्तरियाँ धोने, –
सब्जी साफ करने और अन्य छोटे मोटे काम करने में उनकी मदद करने
लगा। बाद में छात्रों का नेता वहाँ आया तो क्या देखता है, कि वह
दुबला पतला आदमी और कोई नहीं उस
शाम को भोज में निमंत्रित उनके
सम्मानित अतिथि गाँधी थे। इस प्रकार गाँधी
जी ने बिना

हकसी सकोच के छातो की मदद की।

3- गाँधी जी ने श्रीमती पोलक के बच्चे का दूध कैसे छुड़वाया?

उत्तरः–एक बार दहक्षण अफ्रीका में जेल से छूटने के बाद घर लौटने पर उन्होने देखा हक

उनके हमत् की पत्नी श्रीमती पोलक बहत दुबली और कमजोर हो गई थीं। उनका बच्चा उनका दूध पीना छोड़ता नहीं था और वह उसका दूध छुड़ाने की कोहशश कर

रही थी। बच्चा उन्हें चैन नहीं लेने देता था और रो रोकर उन्हें जगाए रखता था। गांधीजी

हजस हदन लौटे उसी रात से उन्होने बच्चे की देखभाल का काम अपने हाथो में ले हलया।

बच्चे को श्रीमती पोलक के हबस्तर पर से उठाकर अपने हबस्तर पर हला लेते थे। वह चारपाई के पास एक बरतन में पानी भरकर रख लेते बच्चे को प्यास लगे तो उसे हपला दें। एक पखवाड़े तक माँ से अलग सुलाने के बाद बच्चे ने माँ का दूध छोड़ हदया। इस उपाय से गाँधी जी ने बच्चे का दूध छुड़वाया।

4- आश्रम में काम करने या करवाने का कौन सा तरीका गाँधी जी अपनाते थे?

उत्तरः–गाँधी जी दूसरो से काम करवाने में बड़े सख्त थे। परन्तु अपने हलए काम करवाना उन्हें पसद न था। वे अपना काय स्वय करते थे उसमें वे हकसी की सहायता भी नहीं लेते थे। गाँधी जी को काम करता देख उनके अनुयायी भी उनका अनुकरण कर कायकरने लगते थे। इस प्रकार गाँधी जी अपने स्वय के उदाहरण द्वारा लोगो को काम की प्रेरणा देते थे।

व्याकरण

➢ कारक

कारक की पररभाषा

सज्ञा या सवनाम के हजस रूप से वाक् के अन्य शब्दो के साथ उनका (सज्ञा या सवनाम का) सम्बन्ध सूहचत हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं।

कारक के भेद-

(1)कता कारक
(2)कम कारक
(3)करण कारक
(4)सम्प्रदान कारक
(5)अपादान कारक
(6)सम्बन्ध कारक
(7)अहधकरण कारक
(8)सबोधन कारक

(1) कता कारक :- जो वाक्य में काय करता है उसे कता कहा जाता है। अथात वाक्य के हजस रूप से हक्रया को करने वाले का पता चले उसे कता कहते हैं।

राम ने पत्र हलखा।

हम कह ा जा रह े
ह ै ं। रमेश ने आम
खाया।

(2) कम कारक :- क्रजस व्यक्तक्त य ा िस्त ु पर क्र ि य ा क ा ि भा ि पड़ ता ह ै उस े कम क ारक कहत े ह ै ं।

- ममता क्रसतार बजा रही है।
- राम ने राि◌ण को मारा।
- गोपाल ने राधा को बुलाया।

(3) करण क◌ारक :- क्रजस साधन स◌े ि◌ि◌या ह◌ोती ह◌ै उस◌े करण क◌ारक कहत◌े ह◌ै◌ं। इसक◌ा क्रिभक्तक्त क्रिन्ह स◌े और के द्वारा होता है।

- बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
- बच्चा बोतल से दू ध पीता है।
- राम ने राि◌ण को बाण से मारा।

(4) सम्प्रद◌ान कारक :- हजसके हलए क◌ोई हक्रय◌ा क◌ाम क◌ी जाती ि◌ै, उस◌े सम्प्रद◌ान क◌ारक कि◌त◌े ि◌ै।

- ि◌े म◌ेर◌े ि◌लए उपह◌ार ल◌ाय◌े ह◌ै◌ं।
- म◌ा ब◌ेट◌े के ि◌लए स◌ेब ल◌ायी।
- म◌ै◌ं स◌ूरज के क्रलए ि◌ाय बना रहा ह।

(5) अप◌ाद◌ान क◌ारक :- स◌ंज्ञ◌ा य◌ा सि◌नाम के क्रजस रूप स◌े क्रकस◌ी ि◌स्त◌ु के अलग ह◌ोन◌े क◌ा ब◌ोध ह◌ो ि◌ह◌ा पर अपादान कारक होता है।

हाथ स◌े छड़ी क्रगर गई।
ि◌ूह◌ा क्रबल स◌े ब◌ाहर क्रनकल◌ा। प◌ेड़ स◌े आम क्रगरा।

(6) स◌ंब◌ंध क◌ारक :- स◌ंज्ञ◌ा य◌ा सि◌नाम के क्रजस रूप क◌ी ि◌जह स◌े एक ि◌स्त◌ु क◌ी द◌ूसर◌ी ि◌स्त◌ु स◌े स◌ंब◌ंध क◌ा पत◌ा ि◌ल◌े उस◌े**,** स◌ंब◌ंध क◌ारक कहत◌े ह◌ै◌ं।

राम क◌ी हकता**,**ब श्याम क◌ा घर। चा◌ुँदी की थालीसोने का गिना।

(7) अणधकरि क◌ारक :-अक्रधकरण क◌ा अथ होत◌ा ह◌ै – आध◌ार य◌ा आश्रय। स◌ंज्ञ◌ा के क्रजस रूप की ि◌जह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अक्रधकरण कारक कहते हैं।

पुस्तक मेज पर है।
पानी में मछली रहती है।
क्रिज में सेब रखा है।

(8) सम्बोधन क◌ारक :- स◌ंज्ञ◌ा य◌ा सि◌नाम के क्रजस रूप स◌े ब◌ुल◌ान◌े य◌ा प◌ुक◌ारन◌े क◌ा ब◌ोध ह◌ो उस◌े सम्ब◌ोधन क◌ारक कहते हैं।

हे ईिर ! रक्षा करो।
अरे ! बच्चो शोर मत करो।
हे राम ! यह क्या हो गया।

लेखन -विभाग

- **पत्र-लेखन**

पर्यावरण में हो रही क्षति के सन्दर्भ में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का निवेदन करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

424, शालीमार बाग,
दिल्ली।
दिनांक 16 मार्च, 2020
सेवा में,
सम्पादक महोदय,
नवभारत
टाइम्स,
दिल्ली।
विषय- अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के सम्बन्ध
में। महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन, सरकार व आम जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूँ कि वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई व कारखानों से निकलने वाले धुएँ के कारण पर्यावरण को अत्यधिक क्षति हो रही है। यद्यपि वन महोत्सव के अवसर पर वन विभाग द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम आरम्भ किया जाता है तथा अनेक वृक्ष भी लगाए जाते हैं, परन्तु उनकी देखभाल नहीं की जाती जिसके कारण पर्यावरण में प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है।
मेरा सभी से निवेदन है कि हम सभी को मिलकर अधिक से े जिससे हम पर्यावरण को अधिक वृक्ष लगाने होंगे सुरक्षित कर पाएँगे।
धन्यवाद।
भवदीय
राहुल

- **गणतणिणध- गांधीजी का चित्र बनाओ।**

रामबाल-कथा
पाठ- 11 लंका विजय

प्रश्न- हदन रात चलकर स◌ेन◌ा न◌े कि◌ा◌ुँ पर ड◌ेरा डाला?
उत्तर - हदन रात चलकर स◌ेना न◌े मि◌े◌ंद्र पवत पर ड◌ेरा डाल◌ा ।
प्रश्न- लक◌ारोि◌ण के हलए हकसन◌े और हकतन◌े हदन◌ो म◌े◌ं प◌ुल त◌ैयार हकया?
उत्तर- लक◌ारोि◌ण के हलए नल न◌े प◌ा◌ुँच हदन◌ो म◌े◌ं प◌ुल त◌ैय◌ार हकय◌ा ।
प्रश्न- राम न◌े अपनी स◌ेन◌ा क◌ो हकतन◌े भ◌ाग◌ो म◌े◌ं ब◌ा◌ुँि◌ा थ◌ा?
उत्तर- राम न◌े अपन◌ी स◌ेना क◌ो चार भाग◌ो म◌े◌ं ब◌ा◌ुँि◌ा था ।
प्रश्न- सम◌ुद्र न◌े राम क◌ो क्य◌ा सल◌ाि◌ द◌ी?
उत्तर - समुद्र ने राम को सलाि◌ दी हक आपकी सेना में नल नाम का एक वानर ि◌ै जो पुल बना सकता ि◌ै ।
प्रश्न- म◌ेघनाद कौन थ◌ा और उसकी क्य◌ा हवर◌्◌ेशत◌ाए◌ुँ थ◌ी?
उत्तर- म◌ेघनाद रावण क◌ा ज्य◌ेष्ठ प◌ुत् था । वि माय◌ावी थ◌ा और हकस◌ी क◌ो हदखाई नि◌ी प़ि◌ता था । वि हछपकर युद्ध करता था ।
प्रश्न- क◌ु भकण कौन थ◌ा?
उत्तर - कभकण रावण क◌ा भाई था। वि एक मि◌ाबल◌ी था जो छि◌ मि◌ीन◌े सोत◌ा था।
प्रश्न- ि◌न◌ुम◌ान कौन सी ब◌ूि◌ी लाए?
उत्तर - ि◌न◌ुमान सजीवन◌ी ब◌ूि◌ी ल◌ाए।

प्रश्न- राम न◌े हकसस◌े हवभ◌ीर्ण के राजयहभर◌्◌ेक क◌ी त◌ैयारी करन◌े क◌ो कि◌ा? उत्तर- राम न◌े लक्ष्मण स◌े हवभ◌ीि◌ण के राजयहभि◌◌ेक क◌ी त◌ैयार◌ी करन◌े क◌ो कि◌ा। **प्रश्न- रावण के बाद लका क◌ा राजा हकस◌े बन◌ाया गय◌ा?**
उत्तर - रावण के ब◌ाद लक◌ा क◌ा राजा हवभ◌ीि◌ण क◌ो बनाया गया।
प्रश्न- सम◌ुद्र पार र◌ाम के ण्शणि◌र म◌े◌ं अच◌ानक खलबली क्य◌ो◌ं मच गई? उत्तर- क्रिभीषण के जाने पर राम के क्रशक्रिर में अि◌ानक खलबली मि गई। **प्रश्न- ि◌ानर ण्ि◌भ◌ीषि◌ को ण्कसके पास ल◌े गए?**
उत्तर- ि◌ानर क्रिभ◌ीषण क◌ो स◌ुग्र◌ीि◌ के पास ल◌े गए।

प्रश्न- कंु भकि की मृत्यु कै से हुई?
उत्तर- कुं भकण की मृत्यु रणभूक्रम में राम और लक्ष्मण के बाणों से हुई।
प्रश्न- राि ि ककसे अपना दाि ना ि ाथ मानता था?
उत्तर- राि ण कुं भकण को अपना दाक्रहना हाथ मानता था ।
प्रश्न- मेघनाद को इंद्रणजत क्यों कि ा जाता ि ै?
उत्तर - मेघनाद ने एक बार इंद्र को परास्त क्रकया था इसक्रलए उसे इंद्रक्रजत कहा जाता है।
प्रश्न- लक्ष्मि का बाि लगने पर मेघनाद ने क्या ककर्ा?
उत्तर - लक्ष्मण का बाण लगने पर मेघनाद पीछे मुड़ा और महल की ओर भागा।

कणि◌त◌ा-16 ि◌न के माग म◌े◌ं
- तुलसीदास

➢ कणिता का सार

कवि कहत◌े ह◌ै कि राम कि पत्न◌ी सीताज◌ी नगर स◌े ि◌न के माग म◌े◌ं बहुत ध◌ै◌य ध◌ारण करके निकल◌ी |ि◌न के माग म◌े◌ं
ि◌ह के ि◌ल द◌ो ह◌ी कदम ि◌◌ल◌ी थी कि उनके माथ◌े पर पस◌ीन◌े कि बद◌े झलकन◌े लग◌ी | उनके मध◌ुर होठ भी स◌ुख गए
|उसके ब◌ाद उन्होन◌े श्री राम स◌े प◌ूछा कि अभी कितनी द◌ूर और ि◌लना ह◌ै ?आप पत्त◌ो◌ं ि◌◌ाली क◌ु टिय◌ा कह◌ा बनाएग◌े ? पत्न◌ी जी कि यह व्य◌ाक◌ु लता द◌ेखकर राम कि आ◌ंखो म◌े◌ं स◌े आस◌ू बहन◌े लग◌े |सीताज◌ी श्री राम स◌े कहत◌ी ह◌ै कि जल ल◌ान◌े गए लक्ष्मण तो अभी ब◌ालक ह◌ी ह◌ै ,उन्ह◌े◌ं समय लग जाएग◌ा | म◌ै◌ं आपके पसीन◌े क◌ो पोछकर ह◌ि◌ा कर द◌ेती ह
|त◌ुलसीद◌ास जी कहत◌े ह◌ै कि अपन◌ी पत्न◌ी के ऐस◌े ि◌ि◌न◌ो◌ं क◌ो स◌ुनकर और स◌ीताजी कि व्य◌ाक◌ु लता क◌ो द◌ेखकर श्रीरामिन्द्र ब◌ैठकर बहुत द◌ेर तक अपन◌े प◌ैरो स◌े क◌ा◌ंट◌े निक◌ालत◌े रह◌े |

➢ कणठन शब्द

1) निकस◌ी
2) मग
3) भाल
4) कनी
5) पणक◌ु टी
6) तीय
7) कतय
8) बयारी
9) भूभुरर
10) नाह
11) लख◌्◌ो◌ं
12) क्रिलोि◌न

➢ शब्दाथ

1) प◌ुर- नगर
2) निकस◌ी- निकल◌ी
3) मग – रास्ता
4) डग – कदम
5) ससक◌ी – दिखाई द◌ी
6) भ◌ाल- मस्तक
7) कनी-बद◌े
8) प◌ुर- होंठ
9) के कतक- कितना
10) पणक◌ु टी- पत्त◌ो◌ं क◌ी बनी क◌ु टिय◌ा
11) कतय- पत्न◌ी
12) ि◌◌ारु- स◌ुं◌दर

13) बयारर- हि◌ा   14) क्रिलोि◌न- आखि◌◌ं

➢ बहुणिकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) ‘ि◌न के माग म◌े◌ं’ पाठ के कक्रि क◌ौन ह◌ै◌ं?

(i) क्रिष्णु ि◌भाकर   (ii) जयंत क्रिष्णु नालीकर

(iii) त◌ुलसीद◌ास   (iv) स◌ुक्रमत्र◌ान◌ंदन प◌ंत

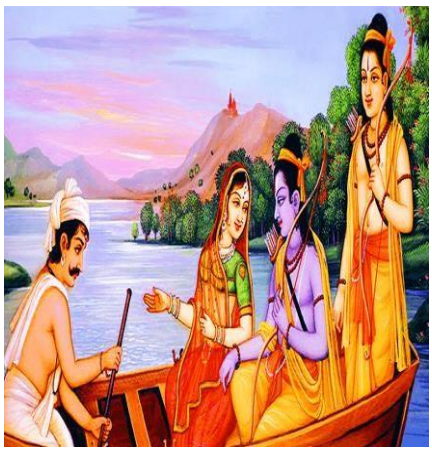

(ख) रघुबीर की ि◌धू कौन थी?

(i) गीता   **(ii) सीता**

(iii) द्रौपदी   (iv) कुं ती

(ग) राम क◌ी आख◌ो◌ं म◌े◌ं आस◌ू क्य◌ो◌ं आ गए?

(i) ि◌न के क◌ि◌◌ो◌ं के क◌ारण

(ii) घर की याद आने से

(iii) सीता की व्याकु लता देखकर

(iv) अपन◌े क्रपत◌ा क◌ो याद करक◌े

(घ) पनक◌ु टी क्रकस ि◌◌ीज स◌े बनती ह◌ै?

(i) पत्थर से   (ii) पानी से

(iii) पत्तों से   (iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) राम और सीता के साथ कौन बन गया?

(i) लक्ष्मि   (ii) भरत

(iii) शत्रुघ्न   (iv) इनमें से कोई नहीं

➢ अणतलघ◌ु उत्तर◌ीर् प्रश्न◌ोत्तर

प्रश्न 1.प्रथम स◌ि◌ैर्◌ा म◌े◌ं क◌ि◌ न◌े राम-सीत◌ा के णकस प्रस◌ंग क◌ा ि◌ि◌न णकर्◌ा ि◌ै?

उत्तर- ि◌थम स◌ि◌◌ैय◌ा म◌े◌ं कक्रि न◌े श्रीराम ि◌ सीत◌ा के अय◌ोध्य◌ा स◌े क्रनकलकर ि◌न गमन क◌ा ि◌णन क्रकय◌ा ह◌ै।

प्रश्न 2. र◌ाम और सीता क◌ि◌◌ा◌ॅ जान◌े के णलए णनकल◌े थ◌े?

उत्तर- राम और सीत◌ा ि◌न जान◌े के क्रलए क्रनकल◌े थ◌े।

प्रश्न 3. ि◌न गमन के समर् सीता ने राम से क्या पूछा?

उत्तर- ि◌न गमन के समय सीत◌ा जी न◌े राम जी स◌े प◌ूछा क्रक क्रकतना और ि◌लना ह◌ै? और पणक◌ु टी कह◌ाबनाइएगा?

प्रश्न 4. पनक◌ु ट◌ी णकस च◌ीज स◌े बनत◌ी ि◌ै?

उत्तर- पनक◌ु टी पत्त◌ो◌ं स◌े बनती ह◌ै।

प्रश्न 5. राम ने रुककर क्या णकर्◌ा?

उत्तर- राम न◌े रुककर थोड◌़◌ा क्रिश्र◌ाम क्रकय◌ा और प◌ैर◌ो◌ं म◌े◌ं ि◌◌ुभ◌े क◌ाट◌ो◌ं क◌ो द◌ेर तक क्रनक◌ालत◌े रह◌े।

➢ लघु उत्तरीर् प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. ि◌न के म◌ाग म◌े◌ं स◌ीत◌ा को ि◌◌ोन◌े ि◌◌ाल◌ी कणठन◌ाईर◌्◌ो◌ं के ब◌ार◌े म◌े◌ं णलख◌ो।

उत्तर- स◌ीत◌ा ि◌न के म◌ाग पर थोड◌़◌ी द◌ूर ि◌लन◌े स◌े ह◌ी थक गई◌ं। उनक◌े म◌ाथ◌े पर पस◌ीना क्रदखाई द◌ेन◌े लग◌ा। उनक होठ सख◌ू गए। ि◌◌े बह◌ुत ब ि◌◌ै न ह◌ो उठ◌ी◌ं और पछन◌े◌ू लग◌ी◌ं क्रक अभी क्रकतनी द◌ूर जाना ह◌ै माग क◌ाट◌ो◌ं स◌े भरा था क्रजसस◌े सीत◌ा क◌ा ि◌लना म◌ुक्तिल ह◌ो रहा था।

प्रश्न 2. सीत◌ा ज◌ी ब◌ेच◌ैन ि◌◌ोकर श्रीराम स◌े क्य◌ा ब◌ात◌े◌ं क◌ि◌◌ी?

उत्तर- सीत◌ा जी अपन◌े पक्रत राम स◌े प◌ूछती ह◌ै◌ं क्रक अब और हम◌े◌ं क्रकतना अक्रधक ि◌लना ह◌ै तथा पनक◌ु टी कह◌ाबनाना ह◌ै। अभी लक्ष्मण पान◌ी ल◌ेन◌े गए ह◌ै◌ं। अतः आप क्रकस◌ी प◌ेड़ क◌ी छाय◌ा म◌े◌ं खड◌़◌े होकर उनक◌ी ि◌त◌ीक्ष◌ा कीक्रजए। जब तक लक्ष्मण पानी लेकर नहीं आ जाते तब

तक पेड़ की छाया में रुककर हम लोग क्रिश्रामकर लेते हैं।

प्रश्न 3. अपने प्रणत राम का प्रेम देखकर सीता जी की क्या दशा हुई?
उत्तर- अपने प्रणत राम का प्रेम देखकर सीता जी मन-ही-मन पुलकित हो जाती हैं।
प्रश्न 4. “धरर धीर दए’ का आशय क्या है?
उत्तर- ‘धरर धीर दए’ का आशय है-धीरज धारण करके यानी मन में हिम्मत बांधकर कोई काम करना।

व्याकरण

➢ **विराम-चिह्न** **विराम शब्द का अर्थ है – रुकना या ठहरना।**
वाक्यों के बीच-बीच में थोड़ी देर के लिए रुकने का संकेत करने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

1. पूर्ण विराम (।) – पूर्ण विराम वाक्य के अंत में लगाया जाता है। जब वाक्य पूरा होता है, तब इसका प्रयोग करते हैं। जैसे

- पक्षी दाना चुग रहे हैं।
- सूर्योदय हो रहा है।

2. अल्प विराम (,) – अल्प विराम का अर्थ है-थोड़ा विराम। जब पूर्ण विराम से कम समय के लिए वाक्य के बीच में रुकना पड़े, तो अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है|
जैसे- भारत में गेहूं, चना, बाजरा, मक्का, आदि बहुत सी फसलें उगाई जाती हैं।

3. अर्ध विराम (;) – वाक्य लिखते या बोलते समय, एक बड़े वाक्य में एक से अधिक छोटे वाक्यों को जोड़ने के लिए अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है|
जैसे—निरंतर प्रयत्नशील रहो; रुकना कायरता है।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) – बातचीत के दौरान जब किसी से कोई बात पूछी जाती है अथवा कोई प्रश्न पूछा जाता है, तब वाक्य के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे

- आपका क्या नाम है?
- तुमने क्या कहा है?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!) – विस्मय, आश्चर्य, शोक, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों को
विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

- वाह! हम यह मैच भी जीत गए।
- छिः यहां इतनी गंदगी क्यों है?

6. योजक या विभाजक चिह्न (–) – दो शब्दों को जोड़ने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है|
जैसे-छोटा-बड़ा, रात-दिन, धीरे-धीरे।
उदाहरण-जीवन में सुख-दुख तो चलता ही रहता है।

7. निर्देशक (डैश) चिह्न (_) – कोई भी निर्देश अथवा सूचना देने वाले वाक्य के बाद निर्देशक-चिह्न का प्रयोग
किया जाता है|
जैसे-नेहा ने कहा-मैं कल जाऊंगी।

8. उद्धरण चिह्न (“.....”) (‘ ’) – उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं- एकहरे (‘ ’) तथा दोहरे (“ ”) एकहरे
उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति, ग्रंथ, उपनाम आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है| जैसे

- ‘रामचरित मानस’ तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ है।

- रामधारी सिंह दिनकर' महान कवि थे।

9. विवरण चिह्न (:-) – इसका प्रयोग निर्देश देने के लिए होता है या किसी विषय का विवरण देने के लिए। जैसे कारक के आठ भेद हैं:

10. कोष्ठक – वाक्य के बीच में आए शब्दों अथवा पदों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है|
जैसे कालिदास (संस्कृत के महाकवि) को सभी जानते हैं।

11. त्ुणटपूरक णचह्न (λ) – हसपद-क्रलखतो समय जब कोई अंश शोष रह जाता हो तो इस क्रिह्न को लगाकर उस शबृ को ऊपर . क्रलख क्रदया जाता हो|

जैसे

- बगीिो मों λ िूल क्रखलो हों
- मौंनो λ तुमसो पहलो λ ही कह क्रदया था।

12. लाघि णचह्न (०) – क्रकसी बडो अंश का संक्रक्षप्त **रूप** क्रलखनो के क्रलए इस क्रिह्न का ियोग क्रकया जाता हो| जौसो मोंबर ऑि पाक्रलयामोंट- एमपी, डॉक्टर-डॉ., अक्रजत अिकाश. ।

लेखन-णिभाग

लिली' पक्रसलोंों बनानो

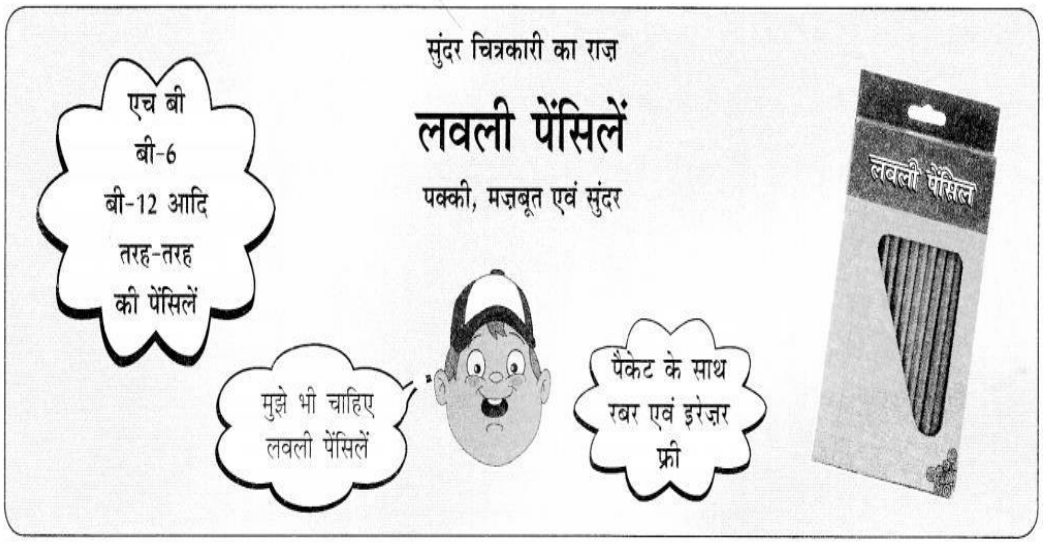

➤ **गणतणिणध-** श्री रामजी का और सीताजी का क्रित्र बनाए |

बाल- रामार्ि
पाठ-12 राम का राज्यणभषेक

प्रश्न- णिभीषि क्यों चाहते थे णक राम कुछ णदन लंका में रुक जाएँ?
उत्तर- विभीषण चाहते थे कि राम कुछ दिन लंका में रुक जाएं क्योंकि वह राम से रीति-नीति सीखना चाहते थे।
उत्तर- पुष्पक हवमान से राम और सीता अयोध्या गए।
प्रश्न- हवभीषण के आग्रह करने पर भी राम लंका में क्यों नहीं रुकना चाहते थे?
उत्तर - हवभीषण के आग्रह करने पर भी राम लंका में नहीं रुकना चाहते थे क्योंकि उनके वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो गए थे और वह तत्काल अयोध्या लौटना चाहते थे।
प्रश्न- सीता के आग्रह पर हवमान हककककंधा में क्यों उतरा?
उत्तर-सीता के आग्रह पर हवमान हककंधा में सुग्रीव की राहनयों तारा और रूपा को लेने उतरा।
प्रश्न- गंगा-यमुना के संगम पर हकसका आश्रम था?
उत्तर -गंगा-यमुना के संगम पर ऋहि भरद्वाज का आश्रम था।
प्रश्न- राम का राजहतलक हकसने हकया?
उत्तर -राम का राजहतलक मुहन वहशष्ठ ने हकया।
प्रश्न- सीता ने अपने गले का हार हकसे हदया?
उत्तर - सीता ने अपने गले का हार हनुमान को हदया।
प्रश्न-भरत के प्रसन्नता का कारण क्या था?
उत्तर- भरत के प्रसन्नता का कारण राम का वापस अयोध्या लौटना था।
प्रश्न- शत्रुघ्न ने राम के राज्याणभषेक की कैसी तैयारी की थी?
उत्तर- राम के राज्याभिषेक के लिए पूरा नगर दीपों और फूलों से सजाया गया था।

प्रश्न-रामराज्य की विशेषताएँ लिखें।

उत्तर- राम के राज में किसी को कमी नहीं था। सब सुखी थे। भेदभाव नहीं था। कोई बीमार नहीं पड़ता था। खेत हरे-भरे थे। पेड़ फलों से लदे रहते थे। राम न्यायप्रिय थे।

प्रश्न- राम ने पुष्पक विमान को किसके पास भेज दिया?

उत्तर - राम ने पुष्पक विमान को कुबेर के पास भेज दिया।

प्रश्न- पुष्पक विमान किसका था और उसे किसने छीन लिया था?

उत्तर - पुष्पक विमान कुबेर का था और उसे रावण ने बल से छीन लिया था।

प्रश्न- अयोध्या के नगरवासी क्यों प्रसन्न थे?

उत्तर- अयोध्या के नगरवासी प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें उनके राम वापस मिल गए थे।

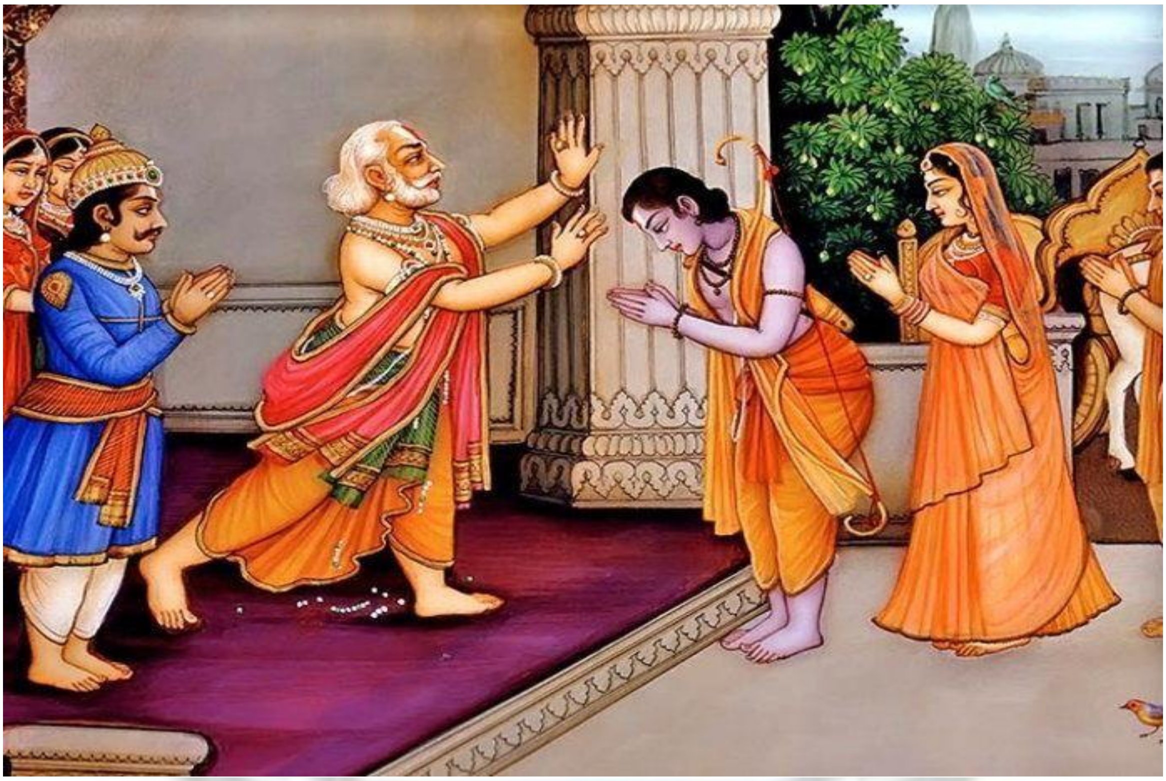

पाठ-17 साँस साँस मेन बाँस

- एल◌े क्स एम ज◌ॉज

➢ पाठ का सार

स◌ा◌ंस स◌ा◌ंस म◌े◌ं ब◌ा◌ंस" नामक पाठ म◌े◌ं कक्रि न◌े ब◌ा◌ंस के महत्व क◌ो बतात◌े हुए उसक◌ी उपय◌ोक्रगता क◌ा ि◌णन क्रकय◌ा ह◌ै। ब◌ा◌ंस म◌ु ख्य रूप स◌े भारत के उत्तर प◌ू ि◌◌ी क्ष◌े त्र◌ो◌ं के 7 राज्य◌ो◌ं म◌े◌ं अत्यक्रधक म◌ात्र◌ा म◌े◌ं उगता ह◌ै।

यह◌ा◌ं के ल◌ोग ब◌ा◌ंस स◌े कई तरह क◌ी ि◌◌ीज◌े◌ं बनाकर अपन◌ी रोज◌ी-रोटी कमात◌े ह◌ै◌ं। ि◌े ल◌ोग ब◌ा◌ंस स◌े कई तरह क◌ी

ि◌टाइय◌ा◌ं, टोक्रपय◌ा◌ं, बतन, ि◌न◌ी ि◌र और घर क◌ा सजाि◌टी साम◌ान बनात◌े ह◌ै◌ं। ज◌ु ल◌ाई स◌े अक्ट◌ू बर तक अत्यक्रधक ि◌ष◌ा होत◌ी ह◌ै क्रजस क◌ारण इन ल◌ोग◌ो◌ं के पास ज◌ंगल स◌े ब◌ा◌ंस ल◌ान◌े और उसस◌े साम◌ान बनान◌े क◌ा सह◌ी समय होत◌ा ह◌ै। ि◌े अपन◌ी क◌ारीगरी स◌े ब◌ा◌ंस स◌े बह◌ु त ह◌ी आकषक ि◌स्त◌ु एं बना द◌े त◌े ह◌ै◌ं। ब◌ा◌ंस यह◌ा◌ं के ल◌ोग◌ो◌ं क◌ी आजीक्रि◌क◌ा क◌ा ि◌म◌ु ख साधन ह◌ै।

➢ कणठन शब्द

1) करतब
2) बहुतायत
3) ि◌लन
4) श◌ंकु
5) मसलन
6) गठान
7) तजनी
8) हुनर

➢ शब्दाथ

1) करतब- करामत
2) बहुतायत- बहुत अक्रधक
3) ि◌लन- ररि◌ाज
4) तरक◌ीब- तरीक◌ा
5) ईधन- जलाने का समान
6) पालना- झला
7) मसलन- उद◌ाहरण के क्रलए
8) हुनर- कलक◌ारी
9) तजनी- अ◌ंग◌ू ठ◌े क◌ी पास क◌ी उगल◌ी
10) क्रि◌य◌ा- तरीक◌ा

➢ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

(क) भारत में बाँस किस प्रांत में अधिक पाया जाता है?
- (i) नागालैंड
- (ii) असम
- (iii) मणिपुर व त्रिपुरा
- **(iv) उपर्युक्त सभी**

(ख) बाँस इकट्ठा करने का मौसम कौन-सा है?
- (i) जनवरी से मार्च
- **(ii) जुलाई से अक्टूबर**
- (iii) नवंबर एवं दिसंबर
- (iv) अप्रैल से जून

(ग) बूढ़ा बाँस कैसा होता है?
- (i) नरम
- (ii) कमजोर
- **(iii) सख्त**
- (iv) लचीला

(घ) चंगकीचंगलनबा थे?
- (i) वैज्ञानिक
- (ii) लेखक
- **(iii) जादूगर**
- (iv) कारीगर

(ङ) 'साँस-साँस में बाँस' पाठ में किस राज्य की बात की जा रही है?
- (i) मणिपुर
- (ii) त्रिपुरा
- (iii) असम
- **(iv) नागालैंड**

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भारत में बाँस कहाँ-कहाँ बहुतायत से पाया जाता है?
उत्तर- बाँस भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम व त्रिपुरा में बहुतायत से पाया जाता है। वहाँ के लोग बाँस का भरपूर उपयोग करते हैं। यह वहाँ के लोगों के पालन-पोषण का बहुत बड़ा साधन है।

प्रश्न 2. बाँस से क्या-क्या चीजें बनाई जाती हैं?
उत्तर- बाँस से चटाइयाँ, टोकरियाँ, बरतन, बैलगाड़ियाँ, फर्नीचर, खिलौने, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल आदि चीजें बनाई जाती हैं।

प्रश्न 3. खपच्चियाँ बनाने के लिए किस प्रकार के बाँसों की आवश्यकता होती है?
उत्तर- खपच्चियाँ ऐसे बाँसों से बनायी जाती हैं जो सख्त न हों, क्योंकि सख्त बाँस टूट जाते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं। एक से तीन वर्ष की उम्र वाले बाँस लचीले होते हैं। ऐसे बाँस खपच्चियाँ बनाने के लिए बहुत उपयोगी होते हैं।

प्रश्न 4. बूढ़े बाँस की क्या पहचान है?
उत्तर- तीन साल से अधिक आयु का बाँस बूढ़ा माना जाता है। बूढ़ा बाँस सख्त होता है जिसके कारण बहुत जल्दी टूट जाता है।

➢ लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जादूगर चंगकीचंगलनबा की कब्र के साथ क्या किस्सा जुड़ा है?
उत्तर- एक जादूगर थे-चंगकीचंगलनबा। अपने जीवन में उन्होंने कई बड़े-बड़े करतब दिखलाए। जब वे मरने को हुए तो लोगों से बोले, मुझे दफ़नाए जाने के छठे दिन मेरी कब्र खोदकर देखोगे तो कुछ नया-सा पाओगे। कहा जाता है कहे मुताबिक मौत के छठे दिन उनकी कब्र खोदी गई और उसमें से निकले बाँस की टोकरियों के कई सारे डिजाइन। लोगों ने उन्हें देखा, पहले उनकी नकल की और फिर नई डिजाइनें भी बनाई।

प्रश्न 2. बाँस की बुनाई कैसे होती है?
उत्तर- बाँस की बुनाई वैसी ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को

आड़ा-क्रतरछा रखा जाता है, क्रिर बाने को। बारी-बारी से ताने से ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे ि ेक का क्रडजाइन बनता है। पलंग

की किनाड़ की बुनाई की तरह। टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूँथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है।

प्रश्न 3. खपच्चियों को किस प्रकार से रंगा जाता है?

उत्तर- खपच्चियों को गुड़हल के फूलों व इमली की पत्तियों आदि के रस से रंगा जाता है। काले रंग के लिए खपच्चियों को आम की छाल में लपेटकर मिट्टी में दबाकर रखा जाता है।

प्रश्न 4. किस मौसम में लोगों के पास खाली वक्त होता है? ऐसे मौसम में वे क्या करते हैं?

उत्तर- जुलाई से अक्टूबर के महीनों में खूब वर्षा होती है। बारिश के इस मौसम में लोगों के पास बहुत खाली समय होता है। इस समय में लोग जंगलों में बाँस इकट्ठा कर सकते हैं।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न - खपच्चियों को तैयार करने में किस बात का ध्यान रखा जाता है?

उत्तर- खपच्चियों के लिए ऐसे बाँसों को चुना जाता है जिनमें गाँठ-गाँठ दूर-दूर होती है। दाओ यानी चौड़े फाल वाले चाकू से इन्हें छीलकर खपच्चियाँ तैयार की जाती हैं। खपच्चियों की लंबाई पहले से ही तय कर ली जाती है; जैसे-आसन जैसी छोटी चीजें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है। टोकरी बनाने के लिए लगभग दो या तीन गठानों वाली लंबी खपच्चियाँ काटी जाती हैं। यह इस बात पर निर्भर करती है कि टोकरी की लंबाई कितनी है।

व्याकरण

➢ अशुद्ध वाक्यों का संशोधन

1. ऋषि का सही विकल्प चुनिए
   (i) रिषी (ii) रिशी
   (iii) ऋषि (iv) रीषि
2. ब्राह्मण का सही विकल्प चुनिए
   (i) बराहमण **(ii) ब्राह्मण**
   (iii) ब्रामण (iv) बराहण
3. श्रीमती का सही विकल्प चुनिए
   (i) श्रीमति **(ii) श्रीमती**
4. प्रदर्शनी का सही विकल्प चुनिए
   (i) प्रदशनी **(ii) प्रदर्शनी**
5. उद्देश्य का सही विकल्प चुनिए
   (i) उद्देश्य (ii) उद्देष्य
   (i) पारिवारिक (ii) परीबारीक
   (iii) परिवारिक
7. योग्य का सही विकल्प चुनिए
   (i) योग **(ii) योग्य**
   (iii) योग्या

8. शुद्ध वाक्य के विकल्प को चुनिए

(i) अपने को घर जाना है।

(ii) मुझे घर जाना है।

(iii) मैं घर जाना है।

(iv) हमारे को घर जाना है।

9. शुद्ध वाक्य के विकल्प को चुनिए

(i) सेब को काटकर नेहा को खिलाओ

(ii) नेहा का काटकर खिलाओ सेब

(iii) सेब को नेहा को काटकर खिलाओ

(iv) नेहा को सेब काटकर खिलाओ

10. शुद्ध वाक्य के विकल्प को चुनिए

(i) उनको आज आ जाना चाहिए।

लेखन-विभाग
सूचना

26 जुलाई 2020

दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अन्तः विद्यालयी दोहा गायन प्रतियोगिता विद्यालय के सभागार में आयोजित है | इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं|

दिनांक - 30 जुलाई 20
समय - प्रातः 10 बजे
स्थान - विद्यालय सभागार
विषय - दोहा गायन

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई 20 तक हिंदी साहित्य समिति के सचिव को दें |

हरीओम दूबे
सचिव
हिंदी साहित्य समिति

- **चित्र-वर्णन** – बांस के उपयोग के बारे में दस वाक्य लिखिए |